चन्दामामा
अप्रैल १९९१

# चन्दामामा

अप्रैल १९९१

★

## अगले पृष्ठों पर



★


एक प्रति: ३ रुपये

वार्षिक चन्दा: ३६ रुपये

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI CLUB
मैगी क्लब से मुफ़्त उपहार पाओ, मौज-मस्ती के रंग जमाओ!
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल हो जाओ, सारे साल मौज मनाओ.
न्यूज़ लैटर्स, उपहार, गेम्स और मौज-मस्ती की कई अन्य चीज़ें...
बस तुम यह मैगी नूडल्स के
5 खाली रैपरों के सामने के हिस्से से काटकर हमें भेज दो.
और, साथ में अपना नाम, पता और अपनी पसंद का उपहार भी
लिख भेजना. हां, अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य हो तो सदस्यता
संख्या भी ज़रूर लिखकर भेजना. और, अगर तुम मैगी क्लब के
सदस्य नहीं हो तो अब मौका मत चूकना. अपना विवरण भेजते
समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. हम तुम्हारे उपहार
के साथ मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे!
हमारा पता है:
मैगी क्लब
पो. ओ. बॉक्स 5788
नई दिल्ली-110 055
'मैगी ऑपरेशन वाइल्डलाइफ गेम' द्वारा वन्य प्राणियों की रक्षा करो.
'मैगी जादू जंगल' से अपना जंगल बनाओ.
आर्ची कॉमिक!
'मैगी किंग ऑफ़ दी जंगल गेम' में जंगल की सैर करो
KING OF THE JUNGLE
'मैगी बर्डहाउस' बनाओ
मुफ़्त
मुफ़्त! मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' चित्र पुस्तिका.
तुम जो 3 उपहार इकट्ठे करोगे तो उनके साथ हम तुम्हें मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमल्स' चित्र पुस्तिका भेजेंगे. उसमें तुम्हें मिलेगी वन्य-प्राणियों के बारे में दिलचस्प और आश्चर्यजनक जानकारी.
हर गेम में पूरा विवरण देख लेना.
MAGGI
2-minute noodles
FAST TO COOK! GOOD TO EAT!
Name:
Membership no.:
HTA 7105HIN
एक और मौका! अगर तुमने 'लॉज ऑफ द जंगल गेम' अभी तक नहीं लिया है तो अब ले लो

Biku, John, Abik, Salim. All waiting for their birthdays. For their PORSCHE.
Mine was yesterday.
PORSCHE
SAMMO
CHANDAMAMA TOYTRONIX
Mfd. by :
Chandamama Toytronix Pvt. Ltd.
Chandamama Buildings,
188, NSK Salai, Vadapalani,
Madras - 600 026.
STP
emote-Control PORSCHE Toy Car
• For the first time in India
• Indigenously manufactured
• Design from SAMMO of South Korea
FROM THE HOUSE OF CHANDAMAMA

# चन्दामामा


संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी


## युद्ध और उसकी विभीषिकाएं

एक मुद्दत से युद्ध लड़े जा रहे हैं । जब दो वर्गों के बीच युद्ध होता है, तब एक की विजय होती है और दूसरे को धूल चाटनी पड़ जाती है ।

लेकिन अब युद्ध का वह पहले जैसा रूप नहीं रहा । विजय किसकी होती है, यह गौण हो गया है—युद्ध के परिणाम तो समूची धरती को भुगतने पड़ते हैं । आज इतने खतरनाक हथियार इस्तेमाल होते हैं, इस तरह की विचारहीन चालें चली जाती हैं कि हवा, पानी, बादल और जंगल, सब इसकी चपेट में आ जाते हैं और अपनी स्वच्छता खो देते हैं । आदमी को मजबूर होकर ज़हर में सांस लेना पड़ता है, और जो कुछ वह खाता और पीता है, वह भी ज़हरीला ही होता है । इतना ही नहीं, इस पृथ्वी पर रहने वाले निर्दोष पशु और पक्षी भी आदमी की इस बेहूदगी को भुगतते हैं ।

इन दिनों भी ऐसा ही युद्ध चला है । आइए, हम प्रार्थना करें कि ऐसी भयानक विभीषिकाओं का हमें बार-बार सामना न करना पड़े ।


वर्ष : ४३ | अप्रैल १९९१ | अंक : ८

एक प्रति : ३ रुपये | वार्षिक चन्दा : ३६ रुपये

बड़े होने में बड़ा मज़ा
सुधा में है ज़ादू ऐसा !
सुधा सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्सेंट्रेट मज़ेदार बड़ा
फ्लेवर्स बड़े सारे– 13 हैं पूरे !
एक पैक से बने गिलास बड़े सारे–
32 गिलास पूरे !
है न सुधा में मज़ा बड़ा !
SUDHA
SOFT DRINK CONCENTRATE
ROSE
'बड़े' छोटों का बड़ा प्यारा.
सुधा
विक्रेता : सारडा फूड्स एंड फ्लेवर्स नाशिक
सॉफ़्ट ड्रिंक कॉन्सेंट्रेट
everest/90/SFF/63 hn

मध्य-पूर्व एशिया या पश्चिम में इन दिनों जो युद्ध चल रह है, उसे खाड़ी युद्ध कहा गया है। यह युद्ध इसलिए शुरू हुआ, क्योंकि इराक ने अपने पड़ोसी देश कुवैत पर हमला करके उसे अपने कब्जे में कर लिया था। कुवैत एक स्वतंत्र देश है। संयुक्त राष्ट्र ने इराक से मांग की कि वह कुवैत से हट जाये, लेकिन इराक ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप कई राष्ट्रों की मिली-जुली सेनाओं ने, जिनका नेतृत्व अमरीका कर रहा है, इराक के विरुद्ध युद्ध शुरू कर दिया।

इज़राइल उन राष्ट्रों में नहीं है जिन्होंने इराक के विरुद्ध लड़ने के लिए अपनी सेनाएं भेजी हैं। फिर भी, जैसे ही युद्ध शुरू हुआ, इराक ने इज़राइल पर प्रक्षेपास्त्र दाग़ने शुरू कर दिये। क्यों?

इज़राइल यहूदियों का देश है। सैकड़ों वर्षों तक उन्हें अपनी भूमि, यानी इज़राइल से वंचित रखा गया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान तो उनकी हालत और भी दयानीय हो गयी थी। हिटलर ने हुक्म दिया और नाजियोंने उन्हें तरह-तरह की यातनाएं देकर लाखों की तादाद में मौत के घाट उतारा। लेकिन जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ, संयुक्त राष्ट्र ने इस बात की स्वीकृति दी कि फिलिस्तीन नाम से जानी जाने वाली भूमि पर यहूदी राज्य और अरब राज्य की स्थापना की जाये। उनकी सीमाएं भी निर्धारित कर दी गयीं।

इज़राइल राज्य की स्थापना १४ मई १९४८ को हुई। लेकिन उसके दूसरे दिन ही मिस्र, इराक, जोर्डन, लेबनान और सीरिया ने मिलकर उसपर हमला कर दिया। हालांकि

इज़राइल का तो अभी जन्म ही हुआ था, फिर भी उसने जमकर और अप्रत्याशित रूप से युद्ध किया और इन आक्रमणकारियों को खदेड़ा ही नहीं, बल्कि अरब राज्य के लिए निर्धारित कुछ भूमि को भी अपने कब्ज़े में ले लिया। लेकिन इसके साथ-साथ इज़राइल का कुछ इलाका जोर्डन और मिस्र (गाज़ा पट्टी) के कब्ज़े में चला गया।

१९६७ में मिस्र ने एक बार फिर इज़राइल पर हमला करने की ठानी। जोर्डन और इराक भी मिस्र की मदद को आये। लेकिन पूर्व इसके कि वे कुछ कर पाते, इज़राइल ने ही उनपर धावा बोल दिया और सीरिया को भी इसमें लपेट लिया। केवल छः दिन तक लड़ाई चली, लेकिन इज़राइल ने तो केवल मिस्र को सिनाई प्रायद्वीप से निकाल बाहर किया, बल्कि सीरिया से गोलन हारट्स छीन लिया और जोर्डन नदी का पश्चिमी तट हथिया लिया।

इन दिनों चले खाड़ी युद्ध में इराक के साथ वे देश नहीं हैं जो इज़राइल के विरोधी रहे हैं। असलियत तो यह है कि मध्य-पूर्व के बहुत से देशों को इराक का कुवैत को अपने कब्ज़े में ले लेना अच्छा नहीं लगा। फिर भी इराक यही सोचे बैठा है कि अगर उसने इज़राइल पर हमला किया और जवाब में इज़राइल ने भी उस पर हमला कर दिया तो इराक को उन सभी पडोसी देशों से मदद मिल जायेगी जो शुरू से ही इजराइल का विरोध करते आये हैं। उस ने सोचा कि युद्ध तब दूसरा मोड़ ले लेगा।
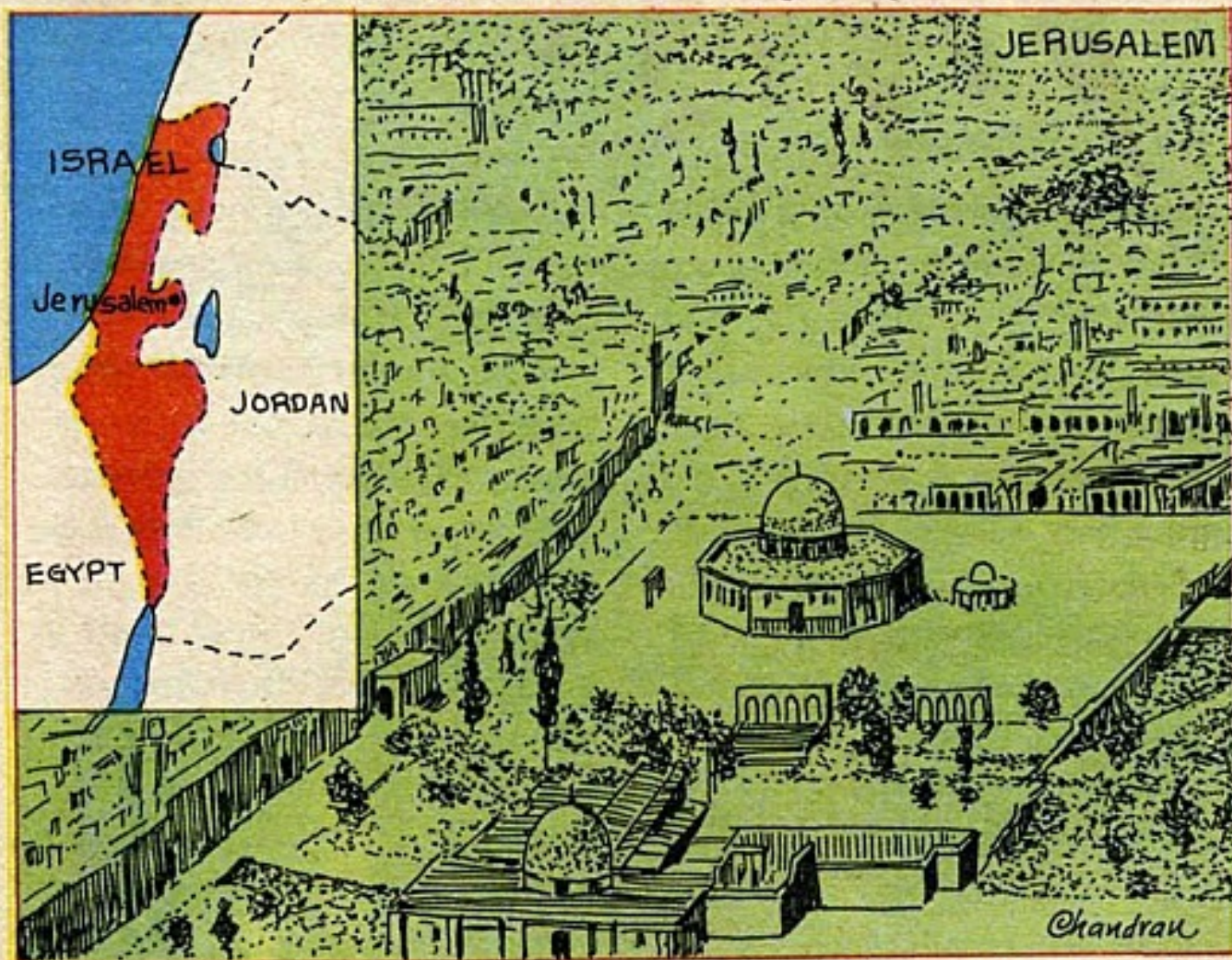
# सूदखोर रतनलाल

तेज़पुर एक छोटा-सा गांव हैं। रतनलाल उस गांव का सबसे बड़ा साहूकार था, पर वह अपने असामियों से सूद भी खूब ऐंठता था। उसका लेन-देन ज़्यादातर अड़ोस-पड़ोस के गांवों में ही होता था।

एक दिन उन गांवों से उसने अपने कुछ देनदारों से दस हज़ार रुपये की वसूली की और फिर वह तेज़पुर के लिए लौट पड़ा। पर तब तक रात हो चुकी थी।

रास्ता ऊबड़-खाबड़ था। अंधेरा तो वहां था ही। इसलिए रतनलाल बड़ा संभल-संभलकर चल रहा था। वंसूली की रकम उसने कपड़े की थैली में छिपा रखी थी। उस थैली को वह बार-बार छूकर अपने को आश्वस्त कर लेता।

फिर उसे एक बात याद आयी। जिस इलाके से वह गुज़र रहा था, वहीं कहीं देबू डाकू रहता था। वह कुछ ही दिन पहले जेल से रिहा हुआ था। रतनलाल उसके बारे में सोचकर एकदम भयभीत हो उठा। अगर देबू को यह पता चल गया कि वह वसूली की रकम के साथ घर लौट रहा है, तो उसकी खैर नहीं। वह उसकी जान भी ले सकता है।

वह डरा-सहमा आगे बढ़ रहा था। इतने में पीछे से आवाज़ आयी, "रुको! कौन जा रहा है?"

रतनलाल एकदम चौंका। उसने अंधेरे में देखने की कोशिश की। कोई ऊंचे कद का आदमी था। वह उसी की ओर आ रहा था। उसके कंधे पर कुदाली-जैसी कोई चीज़ थी। रतनलाल और भी घबराया। हो न हो, यह देबू ही है! मारे डर के उसकी घिग्घी बंध गयी।

अब तक वह ऊंचे कद का आदमी रतनलाल के बिलकुल नज़दीक पहुंच चुका

कमला दुबे

था। उसके कंधे पर वाकई कुदाली रखी थी। रतनलाल तो उसे पहचान नहीं गया, पर उस आदमी ने उसे पहचान लिया। "अरे रतनलाल जी, आप? मैं किशनू हूं! पहचाना मुझे? खेत से घर जा रहा था। आप रात को इस वक्त कहां?"

"ओह, किशनू है! मैंने समझा जाने कौन है!" रतनलाल ने राहत की सांस लेते हुए कहा। "सुबह से देनदारों के चक्कर लगा रहा था। कहीं से कुछ भी वसूल नहीं हुआ। अब कमलापुर से चला आ रहा हूं। चलते-चलते रात ही हो गयी!"

ऐसे ही बतियाते हुए दोनों आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में नहर पड़ती थी। वहां कुछ फिसलन भी थी। रतनलाल बड़ा संभलकर चल रहा था। फिर भी वह गिरते-गिरते बचा। किशनू ने संभाल लिया था।

नहर अभी पार भी नहीं हो पायी थी कि दूसरी तरफ से किसी का बड़ा कड़ा स्वर सुन पड़ा, "कौन हो तुम लोग?"

उस आवाज़ को रतनलाल पहचानता था। उसे सुनते ही उसके होश उड़ गये। वह देबू था। रतनलाल तुरंत किशनू के निकट होता हुआ उसके कान में फुसफुसाया, "भैया, मेरे पास वसूली के दस हज़ार रुपये नकद हैं। मैं तुम से सच नहीं बोला था। रुपयों की यह थैली तुम अपने पास रख लो, मैं तुम से बाद में ले लूंगा।"

किशनू ने रतनलाल की ढाढ़स बंधायी, "आप चिंता न करें। थैली आप अपने पास ही रखें। मैं जब आपके साथ हूं तो आपको किसी प्रकार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं।" और यह कहते हुए किशनू रतनलाल से साथ-साथ आगे बढ़ा।

उन दोनों ने जैसे ही नहर पार की, वैसे ही देबू उनके सामने आ डटा और रतनलाल का गला दबाते हुए बोला, "लाओ, वोह रुपये मुझे दे दो। आज तुमने दस हज़ार की रकम उगाही है!"

रतनलाल तो पहले ही घबराया हुआ था। देबू ने उसका गला दबाया तो उसके भीतर से अजीब-सी आवाज़ उठी। किशनू को लगा कि वह बेहोश हो कर गिर पड़ेगा।

अब किशनू से रहा न गया। झट से उसने अपनी कुदाल संभाली और देबू पर तानते हुए

बोला, "मैं जानता हूं तुम कौन हो! अरे तुम्हारे जैसे डाकू मैंने बहुत देखे हैं। जान की खैर चाहते हो तो इन्हें छोड़ दो, वरना तुम्हारी यहां चिंदियों का भी पता नहीं चलेगा।"

अपने पर तनी कुदाल और किशनू का डील-डौल देखकर देबू घबराया। वह रतनलाल को वहीं छोड़ एकदम चंपत हो गया।

किशनू और रतनलाल अब फिर आगे बढ़ने लगे। किशनू ने रतनलाल को उसके घर तक पहुंचा दिया।

एक महीना ऐसे ही बीत गया। एक दिन देबू एकाएक रतनलाल के घर जा पहुंचा। उसके चेहरे पर उदासी थी। वह रतनलाल से प्रार्थना के स्वर में बोला, "सरकार, बड़ी मुसीबत में हूं। मेरी बेटी की शादी है। आप थोड़ी सी मदद कर दीजिए।"

"मदद? कैसी मदद?" रतनलाल पहले तो घबराया, लेकिन फिर शेर बन गया।

"सरकार, सिर्फ एक हज़ार रुपये की ज़रूरत है! मैं इसे सूद पर मांग रहा हूं। छः महीनों में लौटा दूंगा। हर महीने वक्त पर सूद भी दूंगा!" देबू की याचना जारी थी।

रतनलाल थोड़ी देर सोचता रहा। फिर उससे बोला "अरे, यह तो कोई बात नहीं। तुम्हारी बेटी क्या और मेरी बेटी क्या! तुम शौक से करो शादी उसकी। यह लो एक हज़ार रुपये!" और उसने उसके हाथ पर हज़ार रुपये की गड्डी रख दी।

देबू को गये अभी ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि वहां किशनू आ गया। वह रुआंसा हो रहा था। रतनलाल के पांवों पर गिरता हुआ

बोला, "सेठ जी, मेरी बीवी को बचा लो। वह बहुत बीमार है। घर में फूटी कौड़ी नहीं। दवा-दारू के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं। आप मुझे एक सौ रुपये दे दीजिए। मैं जल्दी ही उन्हें लौटाऊंगा। पर सूद भी बराबर दूंगा।" और इतना कहकर वह रो पड़ा।

रतनलाल किशनू की याचना से बिलकुल नहीं पसीजा। उलटा उसे डांटते हुए बोला, "इसे क्या खैरात-घर समझ रखा है? मुंह उठाकर चले आये। यहां पैसे पेड़ पर नहीं उगते। उनके लिए मैं पूरी तरह अपनी जान खपाता हूं। अभी देबू आया था। किसी तरह उसे एक हज़ार रुपये देकर रफा-दफा किया। अब तुम आ टपके हो। वह तो लौटा भी सकता है, पर तुम कहां से लौटाओगे? उस पर सूद देने की बात कहते हो!"

रोते-रोते किशनू कुछ बोल नहीं पा रहा था। बड़ी मुश्किल से कह पाया, "इस बार दया किजिए, सेठजी! फिर कभी आप को तकलीफ नहीं दूंगा।"

"देखो, किशनू," रतनलाल अब किशनू को समझाने के अंदाज़ में बोल रहा था, "नाराज़ मत होना। दिन भर में तुम कितना कमा पाते हो? बड़ी मुश्किल से तुम्हारा गुज़ारा होता होगा। अब इस कमाई में से तुम खाओगे क्या, और क्या बचाकर मुझे लौटाओगे! रहा देबू का सवाल, तो कहीं से भी पैदा कर लेगा। इसलिए तुम ये दस रुपये लो और अपना काम चलाओ। इन पैसों को तुम्हें लौटाने की ज़रूरत नहीं।"

रतनलाल की बात से किशनू के मन को बहुत चोट पहुंची। वह बिना कुछ लिये रतनलाल के यहां से लौट गया।

दो महीने बीत गये। एक रात रतनलाल के घर में चोरी हो गयी। समूचे गांव को खबर लग गयी कि रतनलाल के घर से पच्चीस हज़ार रुपये नकद और सारे ज़ेवर चले गये हैं। रतनलाल की हालत इतनी जायदाद लुट जाने के ग़म में बहुत खराब थी।

इस घटना को अभी एक ही हफ्ता बीता था। एक दिन किशनू नहर से अपने खेत को पानी दे रहा था। इतने में देबू डाकू वहां आ पहुंचा और किशनू से बोला, "किशनू तुम ही

हो न! तेज़पुर के किशनू!"

किशनू समझ नहीं पाया कि देबू उससे क्या चाहता है। वह एक क्षण चुप रहा। फिर बोला, "हां, मैं ही तेज़पुर का किशनू हूं। बोलो, क्या चाहिए मुझ से!"

"मुझे चाहिए कुछ नहीं तुम से। सिर्फ थोड़ी-सी बात करने आया हूं। उस रोज़ तुम रतनलालके यहां कुछ उधार के लिए गये थे न! मुझे पता है। तुम्हारी बीवी बीमार थी। लेकिन रतनलाल जैसा सूदखोर तुम्हें क्या देता! अब तुम यह थैली संभालो। इसमें दो सौ रुपये हैं। यूँ समझ लो रतनलाल ही तुम्हें दे रहा है। तुम अपना एहसान उसी के प्रति जताना।" और यह कह देबू ने वह थैली वहीं खेत की मेंढ पर छोड़ी और किशनू को बोलने का अवसर दिये बिना वहां से चलता बना।

किशनू कुछ देर तक तो असमंजस में पड़ा रहा। फिर उसने वह थैली उठायी और सीधे रतनलाल के यहां जा पहुंचा। रतनलाल से सारी घटना कह सुनायी और थैली उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला, "सेठजी, इस में वही दो सौ रुपये हैं। मैंने इन्हें गिना नहीं। ऐसे ही थैली उठा लाया हूं।"

"लेकिन यह थैली मेरी नहीं, तुम्हारी ही है," रतनलाल ने कहा। "इसे मैं नहीं लूंगा। उस दिन मुझे से जो भूल हुई, उसके लिए मुझे माफ करो, किशनू! मेरा यह सोचना गलत था कि देबू कहीं से भी मुझे लौटाने के लिए, वह रकम पैदा कर लेगा। उसने तो मेरे ही घर में घात लगा दी। उधर तुमने मुझ पर इतना उपकार किया था! तुमने मुझे मौत के मुंह से बचाया। उस दिन तो देबू मेरा गला घोंट ही देता। मेरी भूल की मुझे सज़ा मिल गयी है। यह थैली अब तुम्हारी ही है। इस पर मेरा किसी तरह का कोई हक नहीं। चाहो तो इसे मेरी जान बचाने के लिए पुरस्कार समझ लो।" और यह कहते-कहते रतनलाल की आंखें भीग गयी थीं।

किशनू अब बिलकुल चुप था। उसके पास कोई शब्द न थे। आखिर, उसने सेठ रतनलाल को नमस्कार किया और थैली को अपने हाथ में लिये वहां से लौट आया।

# विरक्ति और अनासक्ति

एक जंगल में दो मुनि तप करते थे। उनके नाम थे केदार और बद्री। उनके आश्रम भी अगल-बगल में थे। दोनों अधेड़ उम्र के थे।

एक दिन बद्री ने केदार से कहा, "कुछ समय से मेरे भीतर यह इच्छा उठ रही है कि मैं जंगल का जीवन छोड़कर जनता के बीच जाकर रहूं। मैं इसे बराबर दबाये जा रहा हूं!"

बद्री की बात सुनकर केदार कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "बद्री, तुम्हारी यह इच्छा विचित्र है। फिर भी, अगर तुम्हारे मन में यह विचार उठा है तो इसे पूरा करो।"

दूसरे ही दिन बद्री जंगल छोड़कर शहर चला गया। शहर की सुंदरता कुछ ऐसी थी कि बद्री उसके आकर्षण में बंध गया। पर एक ही महीने के भीतर उसे ऊब भी होने लगी। वहां की धोखाधड़ी, छल-कपट, झगड़े-फसाद, षडयंत्र और मारकाट उसकी बर्दाश्त से बाहर थे। उसे निर्णय लेते देर न लगी और वह वापस जंगल में चला आया।

बद्री को वापस आया देख केदार को संतोष हुआ। और जब बद्री केदार को अपने शहरी प्रवास के अनुभव बताने लगा तो केदार ने उन्हें अनसुना कर दिया। बद्री को अचंभा हुआ। वह पूछे बिना न रह सका, "केदार, लगता है शहरी जीवन के प्रति तुम पूरी तरह विरक्त हो। इसके पीछे क्या कारण है? क्या इससे ध्यान में बाधा पड़ती है?"

बद्री के प्रश्न पर केदार धीमे से मुस्करा दिया, फिर बोला, "शहरी जीवन से मुझे किसी प्रकार की विरक्ति नहीं है। केवल अनासक्ति है।"

"लगता है जंगल में आने से पहले तुम शहरी जीवन पूरी तरह से भोग चुके हो!" बद्री ने पूछा।

"शायद तुम ठीक कहते हो। लेकिन तुमने वह जीवन पूरी तरह नहीं भोगा था। इसीलिए वह तुम्हें रह-रहकर अपनी ओर खींचता था। शायद तुम किसी क्षणिक आवेग में यहां आ पहुंचे थे। खैर, अब तुम में विरक्ति पैदा हुई है तो अनासक्ति का भाव भी आ जायेगा। अब तुम इस आकर्षक से बिलकुल परे उठ जाओगे और एकाग्रचित्त होकर ध्यान में उतरोगे! मुनि के लिए यह आवश्यक भी है।"

और इस प्रकार बद्री अनासक्त होकर परिपूर्णता की ओर बढ़ने लगा।

—शांति श्रीवास्तव

जिस पर्वत पर मुनि सदानंद खड़े थे, वहां से बर्फ से ढकी घाटी उगते सूरज के प्रकाश में सुनहरी आभा देती हुई जगमगाती दिख रही थी। घाटी से नीचे नदियों और भूमि का विस्ता था।

मुनि सदानंद ने एक बार पूर्वी आकाश की ओर देखा और फिर अपने सामने की विस्तृत दृश्यावली को। उसे देखकर वह गद्गद हो गये।

फिर सदानंद मुनि अपने से बोले, "ईश्वर की रचना कितनी अद्भुत है! यह पृथ्वी! यह नाना प्रकार के पशु-पक्षी! और यह आदमी! इस आदमी को उसने समझने-बूझने और आगे बढ़ने की क्षमता दी और ईश्वर ने यही चाहा कि वह शांति और अमन-चैन से रहे। उसने उसे यह बुद्धि भी दी कि वह अच्छे और बुरे में भेद करे और वांछित को अवांछित से अलग करे। वास्तव में यह पृथ्वी बहुत ही बढ़िया जगह हो सकती थी, अगर कुछ लोग दूसरों से ज़्यादा खुशियां लूटने या सारे अवसर स्वयं ही हड़प लेने के फिराक में न होते! क्या यह संभव नहीं है कि आदमी की एक ऐसी नस्ल तैयार की जाये जो अच्छाई से भरी हुई हो और जो दूसरों के प्रति क्रूर होना तो जानती ही न हो?"

यह प्रश्न मुनि सदानंद को एक लंबे अर्से से मथ रहा था।

वह एक महान् योगी थे—ठीक वैसे ही जैसे कि वैदिक-काल में होते थे। प्रकृति के कई रहस्य वह जानते थे और अपने अभूतपूर्व ज्ञान
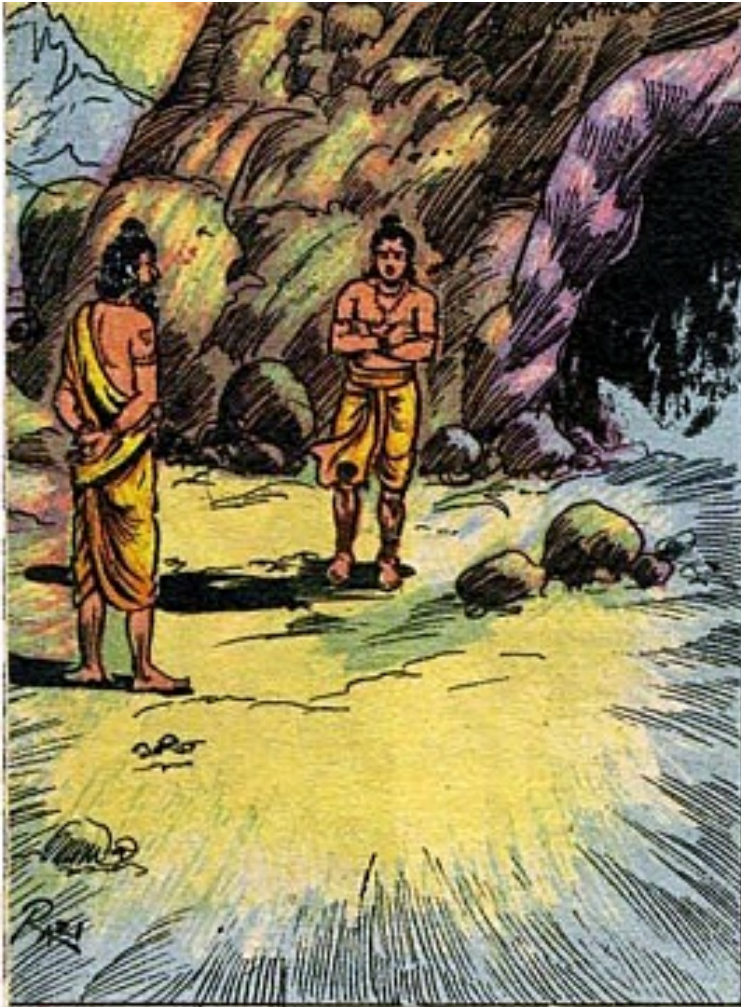
के बल पर उन्होंने कई कई अद्भुत प्रयोग किये थे।

आखिरकार उन्होंने एक ऐसी विधि खोज निकाली थी जिससे असाधारण परिणाम मिलने की आशा थी और जो देखते ही बनते। तभी मुनि सदानंद का शिष्य जिस का नाम सोहम था, बाजू की गुफा से बाहर आया।

"गुरुदेव, वह शुभ घड़ी आ पहुंची है," शिष्य सोहम ने गुफा से बाहर आते ही उन्हें याद दिलाया।

"हां, सोहम। यही वह घड़ी है जब हमें यज्ञ में अंतिम आहुति देनी चाहिए।" मुनि ने उत्तर दिया।

गुरु और शिष्य उस विशाल गुफा के भीतर चले गये।

वह गुफा दोनों तरफ से खुली थी। उसके बीचोबीच अग्नि प्रज्वलित थी। मुनि वहीं, उसके निकट बैठ गये। फिर अपने शिष्य की ओर देखते हुए बोले, "सोहम, अब तुम ज़रा चौकस रहना और लपटों पर आंख रखना। ये लपटें उठती ही जायेंगी। देखें क्या हाथ लगता है—सफलता या असफलता!"

शिष्य ने मुनि के पीछे खड़े होकर स्थिति पर आंख रखनी शुरू कर दी। मुनि एक घंटे तक ध्यानावस्था में रहे। फिर एक घंटे तक उन्होंने मंत्रोच्चारण किया और साथ-साथ अग्नि में शुद्ध घी, फूलों और पत्रियों की अहुति देते रहे।

लपटों के ऊपर अब एक आकृति आकार लेने लगी। शिष्य ने उसे देखा तो उसका चेहरा खिल उठा। वह आकृति अब पूरी तरह मानवीय आकृति बन गयी थी। वह अग्नि में से बाहर आयी और मुनि के समक्ष नतमस्तक हो कर खड़ी हो गयी। उसका शरीर एकदम गठा हुआ था, हालांकि आकार में वह बहुत ही छोटी थी बस, गुड़िया की तरह।

"मैं कौन हूं?" उस नये प्रणी ने प्रश्न किया।

"तुम मानव हो— लेकिन दूसरी प्रकार के। मैंने यज्ञ पूरा करके उसकी शक्ति से तुम्हें प्रकृति के पांच तत्वों से सीधे प्राप्त किया है। तुम दूसरे मानवों से इन अर्थों में भिन्न हो कि तुम्हारे पास जन्मते ही वाक्शक्ति और

ज्ञान है। दूसरे, जहां तुम अच्छे-बुरे, दया और क्रूरता, सच्चाई और झूठ में भेद कर सकते हो, तुम में बुरा होने या क्रूर और फरेबी होने की कोई प्रवृत्ति नहीं है। और तो और, साधारण मानव अपनी आकांक्षाओं के पीछे दौड़ते हैं, जबकि तुम्हारी प्रेरणा तुम्हें तुम्हारी राह दिखायेगी और तुम अन्याय के विरुद्ध लड़ोगे और न्याय का पक्ष लोगे। यदि तुम्हें लेकर मेरा स्वप्न सच हो गया तो तुम एक नयी मानव-जाति के अगुवा कहलाओगे!" मुनि ने विस्तार से उसे समझाया।

"लेकिन मेरे भीतर का ज्ञान मुझ से कह रहा है कि मैं साधारण मानव के मुकाबले बहुत छोटा हूं। ऐसा क्यों?" उस छोटे से मानव ने पूछा।

"तुम कई प्रकार से उससे अलग हो या नहीं? तुम्हारा मस्तिष्क उनके मुकाबले कहीं ज़्यादा विकसित है। तुम्हारा ह्रदय भी उनके मुकाबले कहीं बेहतर है। प्रकृति का ऐसा विधान ही है कि यदि कहीं एक जगह कसर है तो दूसरी जगह वह बहुतायत में है। तुम्हारा शरीर छोटा है, लेकिन इस शरीर में बेहद चुस्ती और शक्ति भरी हुई है। तुम्हें संसार को बेहतर से बेहतर बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। तुमही बताओ, करना चाहिए या नहीं?" मुनि ने प्रश्न की मुद्रा में कहा।

"हाँ, करना चाहिए।" उस छोटे से व्यक्ति ने फौरन कहा।

"तुम्हारा शरीर, जैसी कि इसकी बनावट है, तुम्हारे काम करने में बहुत सहायक होगा," मुनि ने उस छोटे-से शरीर की महत्ता समझाते हुए कहा।

फिर कुछ देर तक चुप रहने के बाद सदानंद मुनि इस प्रकार बोले, "लेकिन, याद रखो तुम हमेशा ऐसे नहीं रहोगे। तुम्हारे जीवन के पहले भाग में तुम्हें बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। तुम मानवता के तमाम दुश्मनों से युद्ध करोगे। जब तुम यह युद्ध काफी कर चुकोगे, तब तुम्हारे जीवन में शांति आ जायेगी। फिर तुम्हारा आकार भी सामान्य मानव का हो जायेगा। वह ठीक-ठीक कैसे होगा, उसे समय ही बतायेगा।"

अब मुनि सदानंद ने अपनी आंखें बंद कर

ली थीं और वह कुछ क्षणों के लिए फिर चुप हो गये थे ।

फिर थोड़ा मुस्कराते हुए बडी शांति के साथ मुनि बेले, "तुम्हारा नाम आब अपूर्व होगा जो इस बात का सूचक होगा कि तुम से पहले तुम्हारे जैसा जीव इस पृथ्वी पर कभी नहीं आया ।"

मुनि से इशारा पाकर सोहम ने अपूर्व के सामने ढेरों फल रख दिये । उन्हें देखते ही अपूर्व के पेट में भूख जाग उठी और उन फलों की तरफ प्यार से उस ने देखा । फिर अपूर्व ने उनमें से कुछ ही खाये ।

"मेरे बेटे, इन में से सभी फल सिद्ध किये गये हैं । उनमें विशेष शक्ति है । एक बार तुम उन्हें खा लोगे तो तुम्हें कई दिनों तक भूख नहीं लगेगी," मुनि ने उसे फिर उन फलों की विशेषता समझायी ।

"धन्यवाद । क्या मैं अब गुफा से बाहर जा सकता हूं?" अपूर्व ने गुफा के बाहर नज़र दौड़कर पूछा ।

"बेशक । अब तुम गुफा से बाहर जाओ । तुम्हारे सामने अब पूरा संसार खुला है," मुनि मुस्कराते हुए बोले ।

अपूर्व ने मुनि के सामने फिर अपना माथा नवाया और वह गुफा से बाहर चला गया । मुनि सदानंद और उनका शिष्य सोहम भी उसके पीछे-पीछे गये ।

बाहर सूर्य चमक रहा था । उसमें ऊष्मा भी थी । यह सब देखते ही अपूर्व के चेहरे पर मुस्कराहट उतर आयी ।

उस पर अपूर्व आनंद से बोला, "अद्भुत! अद्भुत! हर चीज़ मुझे अद्भुत दिखती है!"

"वत्स, मेरी यक कामना है कि तुम्हारी यह भावना बनी रहे । सिद्धांत-रूप से तो हम सब कुछ अद्‌भुत ही चाहते हैं, लेकिन आदमी ने इस दुनिया में बहुत कड़वाहट पैदा कर दी है । तुम्हें यह कड़वाहट इस अदभुत और मधुर संसार से दूर करने के लिए अपना पूरा दम लगा देना चाहिए," मुनि ने गंभीरता से कहा ।

अचानक अपूर्व के माथे पर कुछ सलवटें आ गयीं ।

"मैं यह क्या सुन रहा हूं? लोग जैसे पीड़ा से कराह रहे हैं । और मैं यह क्या देख रहा हूं! आग! घर जल रहे हैं ।" अपूर्व की आवाज़ में परेशानी थी ।
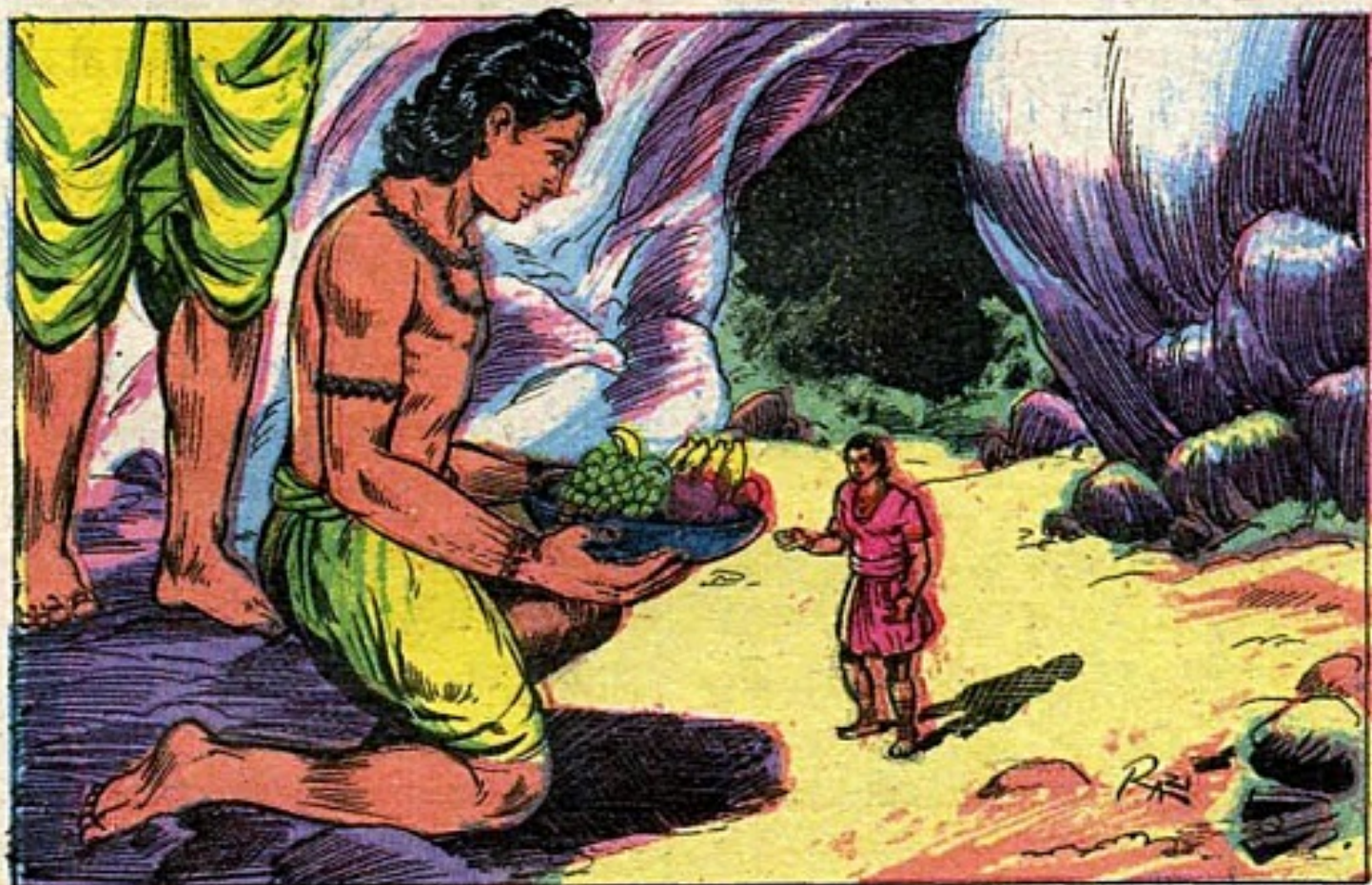
"लेकिन हमें तो कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा, और न ही हम कुछ देख पर रहे हैं!" मुनि के पीछे रहे शिष्य सोहम ने बड़े ही विस्मय से कहा ।

इस पर मुनि सदानंद के चेहरे पर तृप्ति नजर आयी ।

"हम नहीं देख सकते । अपूर्व की अनुभूतियां हमारी अनुभूतियों से कहीं तीव्र हैं ।" मुनि ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा, "वह बहुत दूर से देख सकता है । और सुन सकता है । वह किसी भी मनुष्य की अपेक्षा बहुत तेज़ दौड़ भी सकता है ।"

"तात्, मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं जाऊं और देखूं कि वहां क्या हो रहा है!" अपूर्व ने विनीत होकर याचना की ।

"जाओ, पुत्र । ईश्वर सदा तुम्हारे साथ रहे ।" मुनि ने प्रसन्नता से कहा

अपूर्व ने दौड़ना शुरू कर दिया । दौड़ते-दौड़ते जब वह तेज़ी में आ गया तो वह धीरे-धीरे दिखना बंद होता गया, एक वक्त तो ऐसे लग रहा था जैसे कि शीशे पर मात्र नक्काशी हो । फिर वह बिलकुल अदृश्य हो गया था ।

"यह क्या? अपूर्व तो अब बिलकुल नहीं दिख पा रहा!" शिष्य ने अचंभे से पूछा ।

"जब उसने रफ्तार पकड़ ली तो एक बिंदु ऐसा आया जब उसका शरीर प्रकाश और वायु से एकस्थ हो गया । इसीलिए तुम उसे देख नहीं पाये," मुनि ने उसे समझाया ।

* * *

"अगर तुम मालिक का नया भवन बनाने

से इनकार करोगे तो तुम लोगों को अपने मकानों में रहने का कोई हक़ नहीं," ज़मींदार के पिट्ठू अपने पूरे ज़ोश में बोल रहे थे और साथ में गरीब गांववालों की झोंपड़ियों में आग भी लगाते जा रहे थे।

गांववाले बहुत कमज़ोर थे। उनमें इतनी ताक़त नहीं थी कि ज़मींदार के गुंडों को ललकार सकें। वे विरोध भी कर रहे थे तो बहुत ही दयनीय ढंग से। "क्या हमने किसी तरह इनकार किया? लेकिन रोज़-रोज़ यह कैसे ही सकता है? तब हमारे खेतों में काम कौन करेगा? हमें रोज़ी-रोटी कौन देगा?"

वे ज़ालिम गुंड़े उनकी किसी बात का जवाब देने को तैयार न थे। वे जैसे कि खुशियां मना रहे थे। एक के बाद एक झोंपड़ी आग के हवाले होती जा रही थी।

अचानक उस आग पर फुआर पड़ने लगी। ज़मींदार के पिट्ठुओं ने आकाश की ओर निगाह उठायी। वहां तो कोई बादल नहीं थे। तब यह बारिश कहां से आ गयी? अभी उनका यह कौतूहल मिटा नहीं था कि उन्हें बड़े ज़ोर की आवाज़ सुन पड़ी। लगा जैसे उनके कान बहरे हो जायेंगे। उन्होंने उसी आवाज़ की दिशा में देखा। वहां पास में ही एक नदी बह रही थी। उस नदी के घुटने-घुटने पानी में हाथी ही हाथी खड़े थे, और वे अपनी सूंड से पानी के फव्वारे छोड़ रहे थे। फिर वे चिंघाड़े। कुछ ही मिनटों में आग बुझ गयी। अब उन पर पानी भी फेंकते जा रहे थे। पिट्ठुओं को वहां से दुम दबाकर भागने के सिवा और कुछ नहीं सूझा। जब वे भाग रहे थे तो उन्हें पीछे से किसी की हंसी सुनाई दे रही थी। सबसे अगले हाथी की पीठ पर एक नन्हा-सा, गुड़िया जैसा आदमी बैठा था। क्या वह कोई प्रेत था? या कि ईश्वर का कोई दूत था?

पिट्ठुओं का अब कहीं पता न था।

—(जारी)

# नेक सलाह

कन्याकुब्ज राज्य का नाम शायद तुमने सुन रखा हो । वहां पुष्यमित्र नाम का एक कवि रहता था । वह महान कवि था ।

एक बार पंडित श्रीधर को पुष्यमित्र की कुछ कविताएं पढ़ने का अवसर मिला । वह उनसे बहुत प्रभावित हुए और पुष्यमित्र से बोले, "बंधु, तुम्हारी कविताएं अद्वितीय हैं । यदि राजा इन्हें सुनेंगे तो गद्गद हो जायेंगे । तुम्हारी ग़रीबी भी जाती रहेगी । तुम राजा से तुरंत मिलो ।"

पुष्यमित्र ने राजा से अविलंब भेंट की और उन्हें अपनी एक कविता सुना दी । कविता सुनकर राजा वाकई ख़ुश हुए । उन्होंने पुष्यमित्र को न केवल पुरस्कृत किया, बल्कि उसे अपने दरबार में रख लिया ।

कुछ दिन के बाद पुष्यमित्र पंडित श्रीधर के यहां गया और उनसे बोला, "अब जो मैं कविता लिखता हूं, वह उस कविता के मुकाबले में एकदम घटिया है जो मैं दरबार में आने से पहले लिखता था । इसका मुझे तो एहसास है ही, कुछ और सुननेवालों ने भी मुझ से कहा है । क्या आप मुझे बता सकते हैं कि ऐसा क्यों है?"

पुष्यमित्र की बात सुनकर पंडित श्रीधर मुस्कराये और बोले, "मित्र, उन दिनों तुम्हारी कविता को सामने रखकर राजा ने तुम्हें पुरस्कृत किया था । लेकिन अब तुम्हारे सामने तो राजा से मिलने वाले पुरस्कार और भेंट ही रह गयी है । इसलिए उन पर से अपना ध्यान हटाओगे तो पहले जैसी कविता ही लिखने लगोगे ।"

पंडित श्रीधर की बात का अर्थ पुष्यमित्र ने तुरंत पकड़ा और उसी दिन से उसने पुरस्कार की आशा छोड़कर पहले की तरह कविता लिखना शुरू कर दिया । तब उसकी कविता दिन-प्रति-दिन परवान चढ़ती गयी ।

—मनोज जैन

# मुर्दा शेर जी उठा

राजा विक्रम अपने इरादे से टस से मस नहीं हुए थे । वह फिर उसी पेड़ के पास पहुंचे, पेड़ से लटकती उस लाश को वहां से उतारा और उसे अपने कंधे पर लादकर पहले की तरह मौन साधे श्मशान की ओर बढ़ चले । कुछ ही दूर गये थे कि लाश में मौजूद बैताल बोल उठा, "राजन्, इस अंधेरी रात में आपको इस तरह भटकते देखता हूं तो मुझे अचरज होता है । साथ ही मेरे मन में संदेह भी उठ रहा है कि इतना सब झेलकर जब आप किसी परिणाम पर पहुंचेंगे तो क्या आप उसका फल भी चाहेंगे? अपना संदेह दूर करने के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाऊंगा । उस कहानी के पहले भाग से शायद आप परिचित भी हों । वह कहानी तीन भाइयों और एक शेर से संबंधित है । खैर, मैं आपको पूरी कहानी ही सुनाये देता हूं ताकि आप अपनी तकलीफ भूले रहें! तो आप सुनिए ।" और फिर बैताल वह कहानी

## बैताल कथाएँ

सुनाने लगा:

एक समय था जब दिव्यानंद योगी का जंगल में आश्रम था। वहीं वह अपना गुरुकुल भी चला रहे थे। आश्रम एक पहाड़ की ओट में था। पास ही वहां नदी बहती थी। दिव्यानंद योगी की कुटी के सामने ही विद्यार्थियों के रहने के लिए कुछ और कुटियां रहती थीं।

उस आश्रम में विद्याग्रहण के लिए तीन राजकुमार आये। उनमें से बड़े राजकुमार को राजा बनना था। पर वे तीनों राजकुमार साधारण बुद्धि के थे। उन के पास अक्ल नामक चीज़ नहीं के बराबर थी। किसी सूक्ष्म बात को पकड़ने में उन्हें देर लगती। उन्हें पढ़ाना आसान काम नहीं, यह बात उस आश्रम का हर कोई जानता। फिर भी योगी दिव्यानंद उन पर ख़ूब मेहनत करते। उन्हें भविष्य में जो भी उपयोगी सिद्ध होने वाला होगा, वही पाठ पढ़ाने में दिव्यानंद अथक परिश्रम किया करते।

तीनों राजकुमारों को तंत्र विद्या में गहरी रुचि थी। वे इसके हर पक्ष को जान लेना चाहते थे, हालांकि योगी दिव्यानंद उन्हें ऐसी कोई विद्या देना नहीं चाहते थे। राजकुमारों ने तंत्र-विद्या के बारे में जो कुछ भी जाना, अपनी लगन के बल पर जाना। वहां तंत्र-संबंधी कई तालपत्र तो थे ही। तनहाई में तीनों राजकुमार तंत्र संबंधी उन तालपत्रों को बड़ी रुचि से पढ़ लिया करते थे।

गुरुकुल में गोविंद नाम का एक और विद्यार्थी भी था। उसकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी।

वैसे भी गोविंद बड़ा संयमी और विवेकशील था। वह योगी दिव्यानंद से योग विद्या सीख रहा था, और विद्या पा जाने के बाद वह योगी जीवन बिताने वहीं आश्रम में रह जाना चाहता था।

दिव्यानंद का गोविंद पर विशेष स्नेह भी था। वह यह भी जानते थे कि उनके बाद यदि कोई गुरुकुल को चला पायेगा तो वह गोविंद ही होगा। लेकिन दिव्यानंद यह भी जानते थे कि गोविंद में अभी दुनिया के आकर्षणों के प्रति अनासक्ति नहीं आयी है और वह अब भी धन-संपत्ति,

मान-प्रतिष्ठा के प्रति विशेष आकर्षण रखता है ।

इस बीच राजकुमारों को पता चला कि उनके पिता का स्वास्थ्य ठीक नहीं है और उन्हें देख-भाल की आवश्यकता है । हालांकि राजधानी से उन्हें कोई लिवाने नहीं आया था, फिर भी राजकुमार खुद ही चलने के लिए तैयार हो गये ।

गुरु दिव्यानंद को जब उन्होंने अपने निर्णय के बारे में बताया, तो उन्होंने किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं की, बोला, ''ठीक है, तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा तो अब

तुम पूरी सुरक्षा प्रदान कर सकते हो । ये राजकुमार बहुत नेक हैं और कोमल भी हैं, यद्यपि वे बुद्धि के बहुत धनी नहीं हैं । मुझे आशा है तुम अपनी ओर से किसी तरह की कोर-कसर नहीं उठा रखोगे ।"

गुरु की बातें सुनकर गोविंद बोला, "गुरुजी, मैं तो कुछ और ही चाहता था । मैं तो विद्या समाप्त कर के यहीं, इसी आश्रम में आपकी सेवा करते हुए अपना जीवन बिता देना चाहता था!"

दिव्यानंद धीमे से हंसे, "गोविंद, मेरे बेटे, मैं जानता हूं कि तुम सुख-सुविधा और कीर्ति-प्रतिष्ठा के प्रति आसक्त हो । सत्य और धर्म का पालन करते हुए एक समर्थ मंत्री के नाते नाम कमाना कोई छोटी बात नहीं । पर मैं तुम्हें एक रास्ता बताता हूं । जब भी तुम्हारा मन राजसी ठाठ-बाट से भर पाये तो तुम वापस आश्रम में आ सकते हो । ऐसी बात से मुझे खुशी ही होगी । अब तुम निश्चिंत होकर चलो, इन राजकुमारों को अपना साथ दो ।"

अगले दिन राजकुमार और गोविंद राजधानी के लिए निकल पड़े । दोपहर होते-होते वे जंगल के एक झरने के पास पहुंचे और वहां बैठकर अपने साथ लाया हुआ भोजन खाने लगे ।

इस तरह वे भोजन जब कर चुके तो सब से छोटे राजकुमार की नज़र कुछ ही दूरी पर पड़े हड्डियों के ढ़ेर पर पड़ी । वह ग़ौर से उसे देखने लगा ।

फिर चहक कर छोटा राजकुमार बोला, "ये तो शेर की हड्डियां हैं । मैं अपनी मंत्र शक्ति से अभी इन हड्डियों को जोड़े देता हूं । मुझे तो देखना होगा कि ये पूरे शेर का आकार ले लेंगी या नहीं ।"

"यदि तुम इन हड्डियों को जोड़कर उन्हें खड़ा कर दोगे तो मैं एक ऐसा मंत्र जानता हूं जिस से इस कंकाल पर मांस-चढ़ आयेगा । इतना ही नहीं, उस में खून का संचार भी हो जाएगा ।" दूसरे राजकुमार ने भी अपने चातुर्य का परिचय दिया ।

अब बड़े राजकुमार से भी यह सब देखते हुए चुप न रहा गया ।

वह बोला, "यदि तुम इस कंकाल को मांस-मज्जा दे पाओगे तो मैं भी अपना मंत्र

चला दूंगा जिससे इसमें जान आ जायेगी, और यह शेर मुर्दा से फौरन जिन्दा होकर पहले की तरह हो जायेगा ।"

राजकुमारों के इरादे को जानकर गोविंद एकदम परेशान हो उठा । वह उन्हें समझाते हुए बोला, "यह तुम लोग क्या करने जा रहे हो? क्या तुम मुर्दा शेर को जिंदा देखना चाहते हो? नहीं, नहीं । ऐसा करना तो खतरे से खाली नहीं है!"

पर राजकुमार तो अपनी बात पर अड़ गये थे । वे तो कुछ और ही सपने देख रहे थे । वे सोच रहे थे कि वे राजधानी में शेर की सवारी करते हुए प्रवेश करेंगे, और लोग उन्हें देखकर वाह-वाह कर उठेंगे । इसलिए वे गोविंद के मना करने पर भी बारी बारी से मंत्रोच्चारण करते गये ।

यह सब देखकर गोविंद बिलकुल घबड़ा गया था । तीनों राजकुमार उस मुर्दे शेर को जिलाने पर ही तुले हुए थे । गोविंद को जब कोई चारा न दिखा तो वह एक पेड़ की शाखा पर जा बैठा ।

अब जैसे-जैसे मंत्र उच्चरित हो रहे थे, वैसे-वैसे शेर आकार लेता जा रहा था । पहले मिनटों में ही बिखरी हुई हड्डियों ने जुड़कर कंकाल का रूप ग्रहण किया । फिर उस कंकाल पर देखते-देखते मांस-मज्जा और चर्म आ गया ।

फिर जैसे-जैसे मंत्र उच्चरित होते चले, वैसे-वैसे शेर के उस निर्जीव शरीर में जान आ गयी और वह हिलने-डुलने लगा । अब

वहाँ एक पूरा शेर खड़ा था—जैसे कि वह तंद्रा से जगकर अभी-अभी सचेत हुआ हो ।

फिर वह शेर अपनी अयाल हिलाकर दहाड़ने लगा, और जैसे ही उसकी नज़र राजकुमारों पर पड़ी, वह उन्हें खाने के लिए उन पर कूदने को हुआ ।

तभी गोविंद जोर से चिल्लाया, "हे मृगराज, रुक जाओ!"

दरअसल, गोविंद पशु-पक्षियों की भाषा जानता था । शेर ने उसकी बात समझी और सर उठाकर उसकी ओर देखा । गोविंद ने कहा, " मृगराज, यह क्या! तुम अपने ही प्राणदाताओं को खाने जा रहे हो!"

शेर को गोविंद की बात पर हैरानी हुई ।

बोला, "भला, मैं कैसे जानूं कि ये मेरे प्राणदाता हैं! लेकिन अब मैं कर भी क्या सकता हूँ! इन्हों ने मुझे ज़िंदा किया हो तो मुझे भूख भी लगेगी ही । मुझे तो ऐसे लग रहा है जैसे मैं ने कई वर्षों से कुछ खाया ही नहीं!"

जिस समय शेर और गोविंद के बीच बातचीत चल रही थी, तीनों राजकुमार वहाँ से खिसक लिये थे । शेर और गोविंद ने कई विषयों पर बातचीत की—न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, नीति-अनीति । शेर किसी तरह भी सहमत होने को तैयार न था । वह बोला, "मुझे तुम्हारे तर्क में जान नहीं दिखती । मैं यह कैसे मान लूं कि जिसने मुझे प्राण दिये हों, मैं उन्हें न खाऊँ! मैं तो यह जानता हूँ कि प्राण ही सब से मूल्यवान होते हैं । मुझे उनकी रक्षा तो करनी ही है । इसलिए मुझे अपनी भूख मिटानी होगी । मेरे पास इतना वक्त तो है नहीं कि मैं किसी को पहले ढूंढू और फिर शिकार करूं । मैं तो भूख से बेहाल हूँ । फौरन कुछ न कुछ खाना होगा । इसलिए मैं राजकुमारों को ही खाऊंगा ।"

"मृगराज, तुम्हारी भूख तो मुझे खाने से भी मिट सकती है । मैं पेड़ से नीचे आ जाता हूँ । तुम मुझे खाकर अपनी भूख मिटा लो ।" गोविंद ने शेर से याचना करते हुए कहा ।

"रुको मानव!" शेर ने गविंद को चेताते हुए कहा, "इससे पहले कि मैं तुम्हें खाऊं, तुम मेरे एक सवाल का जवाब दो । वैसे तो जिंदा रहने के लिए हर प्राणी हमेशा तत्पर रहता है, लेकिन इस तरह जिंदा रहने के पीछे क्या कोई विशेष उद्देश्य नहीं? हे मानव, बताओ कि प्राणियों के जीवित रहने में कौन-सा प्रयोजन निहित है!"

पल भर रुककर गोविंद ने गहराई से कुछ सोचा और उत्तर दिया, "जीवन को गतिवान् बनाये रखना, यानी अज्ञान-रूपी अंधकार से बाहर आकर ज्ञान-रूपी प्रकाश का संदर्शन करना ।"

"बहुत खूब!" शेर बोला, "तुम ने मुझे बता दिया कि कौन-सी चीज़ मांगनी चाहिए और कौन-सी नहीं । तुमने यदि मुझे नहीं बताया होता कि राजकुमारों ने मुझे प्राण दिये हैं तो मैं कब का उन्हें मारकर खा गया होता । इस तरह तुम ने मुझे ज्ञानोपदेश देकर गुरु का काम किया है । तुम वास्तव में मेरे गुरु हो ।

अब मैं अपने गुरु को कैसे खा सकता हूँ! मुझे तुम पर पूरा भरोसा है । अब तुम्हें ही मेरे प्राणों को बचाना है ताकि मैं भूख से खत्म न हो जाऊं । कोई मार्ग बताओ ।"

"तुम जो कह रहे हो, वह सराहनीय है । पर मुझे राजकुमारों की भी रक्षा करनी है । इसलिए मैं स्वयं को ही पेश कर सकता हूँ ।" गोविंद का दो-टूक उत्तर था ।

इतने में राजकुमार वहाँ धनुष-बाण लिये दो हुट्टे-कट्टे शिकारियों के साथ आ पहुँचे । इससे पहले कि गोविंद उन्हें रोक पाता, शिकारियों ने धनुष पर चिल्ला चढ़ाया और शेर पर बाण चला दिया । बाण के लगते ही शेर घायल हो जमीन पर लुढ़क गया और छटपटाने लगा । फिर उसने अंत में अपने प्राण त्याग दिये ।

शेर की मृत्यु पर राजकुमार बहुत खुश हुए । वे अब गोविंद को इधर-उधर देख रहे थे । इतने में गोविंद पेड़ से नीचे उतर कर राजकुमारों के पास आया । बड़े राजकुमार ने उसका अभिवादन किया और बोला, "हम तुम्हारे प्रति बड़े आभारी हैं । अपने पर विश्वास करने वालों की रक्षा तुम बहुत अच्छी तरह जानते हो ।"

"नहीं, यह ठीक नहीं है," गोविंद धीमे से बोला ।

"ऐसी बात नहीं," बड़े राजकुमार ने उसे टोका, "तुम तो बड़े विनयी हो । तुम अपनी प्रशंसा भी सुनना नहीं चाहते । चलो, अब यहाँ से चलें । मैंने निश्चय किया है कि मेरे

प्रधान मंत्री तुम्हीं बनोगे । दूसरे, राजा के बाद दूसरा धनी व्यक्ति भी तुम ही होगे । तुम नें कोई छोटा-मोटा काम नहीं किया, तीनों राजकुमारों की जान बचायी है ।"

गोविंद ने एक क्षण सोचा और बोला, "जो धन तुम मुझे देना चाहते हो, उसे पाकर मैं ग़रीब हो जाऊंगा । अब तुम इन शिकारियों के संरक्षण में सीधे राजधानी जाओ । मैं वापस गुरु जी के पास जा रहा हूँ । मैं वहीं रहूँगा ।" और बिना रुके गोविंद आश्रम की ओर चल पड़ा ।

बैताल ने अपनी कहानी खत्म कर ली थी । बोला, "राजन् , गोविंद ने राजकुमारों को शेर का आहार बनने से बचाया था । फिर भी उसने इस बात से इनकार क्यों किया कि

वह अपने पर विश्वास करने वालों की रक्षा करना नहीं जानता। यह भी सच है कि धन, संपत्ति, और ऐश्वर्य के प्रति उसे आसक्ति थी। फिर उसने यह क्यों कहा कि अपार धन पाकर वह ग़रीब हो जायेगा? इन सब प्रश्नों का उत्तर जानते हुए भी अगर आप उन्हें बताने से हिचकते रहें तो आपका सर फट जायेगा।"

राजा विक्रम का उत्तर इस प्रकार था:

"भूखे शेर से सही ढंग से तर्क-वितर्क करके गोविंद ने राजकुमारों की जान बचायी। लेकिन राजकुमारों की अपेक्षा शेर गोविंद पर ज्यादा विश्वास करने लगा था, और उसकी राजकुमारों के हाथों जान बचाने में वह असफल रहा। इसलिए उसने कहा कि अपने पर विश्वास करनेवालों की जान बचाने में वह समर्थ नहीं है। प्राणियों के जीवित रहने संबंधी प्रयोजन के बारे में शेर ने जब गोविंद से प्रश्न किया तो उसका उत्तर था—अज्ञान-रूपी अंधकार से छूटकर ज्ञान-रूपी प्रकाश पाना। जब गोविंद ने यह उत्तर दिया था तब उसे आभास हो गया था कि वह अपने जीवन के प्रयोजन से भटक गया था। उसे धन-संपत्ति के प्रति मोह था, वह प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य भी चाहता था, पर वह साथ-साथ अपने गुण-दोषों का विश्लेषण भी करता रहता था। इसलिए वह समझ गया था कि मंत्री या प्रधान मंत्री बनकर या अपार धन-संपत्ति बटोरकर वह मानवीय गुणों को खो देगा। राजा जनक जैसे विलक्षण व्यक्ति ही सुख-भोग-विलासिता वाले वातावरण में रहकर भी उससे बचे रह सकते हैं। यह किसी योगी के लिए ही संभव है। गोविंद के लिए यह संभव नहीं था। इसलिए उसने योगी का जीवन चुनना बेहतर समझा। और इसीलिए वह आश्रम को लौट गया।"

उत्तर देने से राजा का मौन भंग हो चुका था। इसलिए बैताल एक क्षण में ही वहाँ से अदृश्य हो गया। और फिर उसी पेड़ की शाखा से जा लटका। (कल्पित)

(आधार: मनोजदास की रचना)

# उनके सपनों का भारत

## आओ, हम एकजुट हो जायें

१६ अगस्त, १९५६ को मदुराई में अपने भाषण में डा॰ राजेंद्रप्रसाद ने कहा था: "आज के संसार में भारत, जहाँ ३६ करोड़ से ज़्यादा लोग बसते हैं, बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। लेकिन ज़रा यह भी तो सोचिए कि अगर हम एक-दूसरे से फिर जुदा कर दिये जायें तो परिणाम क्या होगा! तब एक भारत के बजाय कई छोट-छोटे स्वतंत्र राज्य उठ खड़े होंगे। कहा जाता है कि एकता में ही शक्ति है। इसलिए कलियुग के इस ज़माने में ज़रूरी है कि हम सब ३६ करोड़ भारतवासी एकजुट हो जायें। एकता का मतलब कोरी एकरूपता नहीं। हमारे राष्ट्र की तो बल्कि खूबी यही है कि यहाँ विभिन्नता में एकता है।"

डा॰ राजेंद्र प्रसाद भारत के महानतम राजनीतिज्ञों में से थे। उनका जन्म बिहार में १८८४ में हुआ था। उनकी वकालत ज़बरदस्त चल रही थी, लेकिन उन्होंने उसे छोड़ दिया और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। १९५० में भारत जब गणतंत्र राज्य बना तो उन्हें देश के प्रथम राष्ट्रपति के रूप में चुना गया। १९५२ तथा १९५७ में उन्हें फिर राष्ट्रपति चुना गया। १९६२ में उनका देहावसान हो गया।

## क्या तुम जानते हो?

१. भारत, ब्रिटेन, जापान, अमरीका और रूस में संसद को किस नाम से जाना जाता है?

२. दुनिया में सब से बड़ा देश कौन-सा है?

३. किस महाद्वीप में यह स्थित है— यूरोप में या एशिया में?

४. दूसरा सब से बड़ा देश कौन-सा है और वह किस महाद्वीप में स्थित है?

५. तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे और सातवें स्थान पर कौन-कौन से देश हैं?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

# गणपति
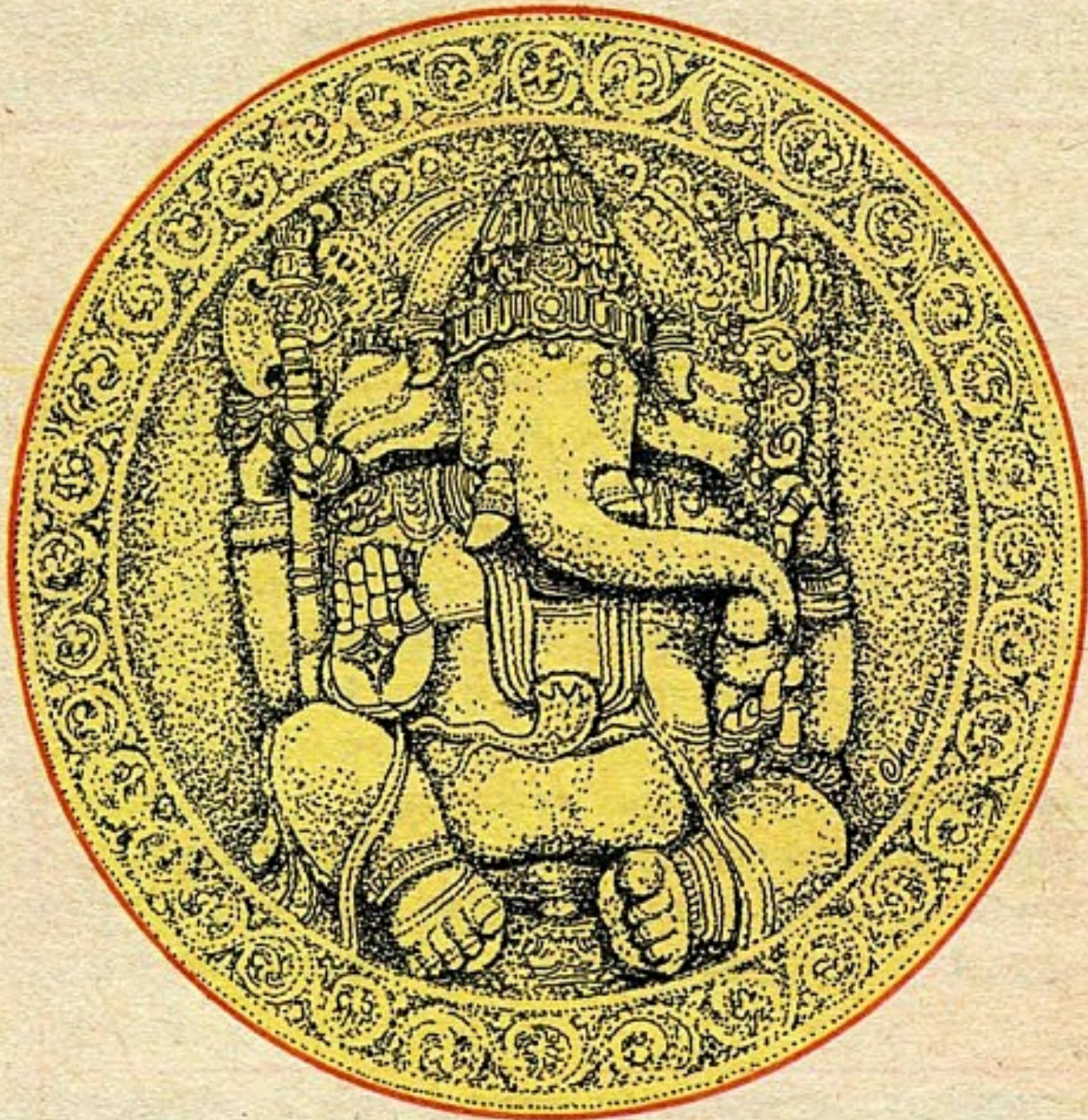
कहीं भी पूजा-पाठ शुरू होना हो या किसी देवता की आराधना शुरू होनी हो, गणपति को सबसे पहले याद किया जाता है । गणपति को गणेश या विनायक के नाम से भी याद किया जाता है ।

तीनों ही नामों में गणों के नायक का आभास मिलता है । गण अलौकिक प्राणी हैं जो हमेशा गणपति की सेवा में रहते हैं । उनका एक और नाम विघ्नेश्वर, यानी हर बाधा को दूर करने वाला, भी है ।

माँ पार्वती ने गणपति की रचना अपनी इच्छानुरूप की थी । इसीलिए उन्हें शिव और पार्वती की संतान भी माना जाता है । उनका हाथी का सर क्यों है,

इसके पीछे कई कथाएँ हैं । एक कथा के अनुसार जब शनि ने उनकी ओर देखा तो उनका सर गायब हो गया । पर शनि यह बिलकुल नहीं चाहते थे । उस समय पास ही हाथी का सर रखा था । उनके वही हाथ लगा और उसी को उनके सर की जगह जमा दिया गया । इस घटना का प्रतीकात्मक अर्थ कुछ भी हो, लेकिन गणपति इस अद्भुत रूप में बिलकुल अलग और सुंदर दिखते हैं ।

गणपति को बुद्धि (समझ) और सिद्धि (सफलता) देने वाला भी माना जाता है । ये दोनों गुण प्रायः उनकी अर्द्धांगिनियों के रूप में अंकित किये जाते हैं ।

# चन्दामामा की खबरें

### *सब से छोटा टेलीफोन*

जापान ने एक ऐसा टेलीफोन तैयार किया है जो अब तक तैयार किये गये टेलीफोनों में सब से छोटा और सब से हलका है । इसका वज़न केवल १० औंस (२८३ ग्राम) है । है तो यह छोटा, पर बातें बड़ी-बड़ी करता है । नहीं, हमारा मतलब है कि यह दूसरे टेलिफोनों की अपेक्षा आवाज़ को और भी बढ़िया बना देता है ।

### *शेर रे शेर, मेरे और निकट आ*

उड़ीसा के सुप्रसिद्ध पशु उद्यान (चिड़ियाघर) 'नंदन कानन' में संसार की पहली ऐसी शोभा-यात्रा आयोजित की जा रही है जिसमें सफेद शेर ही रहेंगे । तुम चाहो तो अपनी गाड़ी में बैठकर इन शेरों के बीच से गुज़र सकते हो और चाहो तो किसी ऊंचाई से उन्हें देख सकते हो ।

दिन में ये शेर काफी भव्य दिखेंगे ।

# आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. हैरोडोटस को 'इतिहास के जनक' की उपाधि किसने दी थी?

२. अंगरेजी साहित्य की वह कौन-सी कृति है जो बड़ों के लिए 'व्यंग्य' मानी गयी, लेकिन बाद में वह बच्चों में बेहद लोकप्रिय हुई?

३. भारत में मान्यता-प्राप्त भाषाएँ कितनी हैं?

४. वे कौन कौन-सी हैं?

५. सब से ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा कौन-सी है? उसके बाद कौन-सी चार भाषाएँ सब से ज़्यादा बोली जाती हैं?

## उत्तर

### क्या तुम जानते हो?

१. लोक सभा तथा राज्य सभा (भारत); हाउस ऑव कॉमन्स तथा हाउस ऑव लॉर्डस (ब्रिटेन); डीयट (जापान); कांग्रेस (अमरीका); सुप्रीम सोवियत (रूस) ।

२. यू.एस.एस.आर. (यूनियन ऑव सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक्स)- सोवियत रूस ।

३. यह योरूप और एशिया में फैला हुआ है ।

४. उत्तरी अमरीका में कैनेडा ।

५. चीन, संयुक्त राज्य अमरीका, ब्राजील, आस्ट्रेलिया तथा भारत ।

### साहित्य

१. पहली शताब्दी (ईसा पूर्व) के रोमन दार्शनिक और वक्ता, सिसेरो ।

२. जोनाथन स्विफ्ट द्वारा रचित 'गुलिवर्स ट्रेवल्स' ।

३. पंद्रह ।

४. असमिया, बंगला, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु, उर्दू तथा सिंधी ।

५. हिंदी । फिर तेलुगु, बंगला, मराठी और तमिल ।

संसार की पौराणिक कथाएं – ४

# बेल्लोरोफन की वीरता

आर्गोस के राजा प्रोइटस के पास बेल्लोरोफन नाम का एक राजकुमार उससे भेंट करने चला आया और उसके यहां अतिथि बनकर रहने लगा। बेल्लोरोफन सुंदर था, बुद्धिमान था। इसलिए वह राजा प्रोइटस की ईर्ष्या का कारण बन गया। राजा प्रोइटस उससे इतना जलने लगा कि उसे खत्म करने पर ही तुल गया।

सीधे-सीधे तो राजा प्रोइटस अपने कल्पित-शत्रु को पार नहीं लगा सकता था, इसलिए उसे खत्म करने का उसने दूसरा तरीका सोचा। "नौजवान, मैं देख रहा हूं कि तुम घोड़ा बहुत तेज़ दौड़ा सकते हो। क्या तुम मेरी एक गुप्त संदेश मेरे मामा, लिसिया के राजा जोबेटस तक पहुंचा दोगे?" राजा ने उससे प्रश्न किया।

बेल्लोरोफन ने फौरन हामी भर दी। संदेश में कहा गया था कि मामा, बेल्लोरोफन को किसी तरह पार लगा दें। भांजे का संदेश पाकर मामा गहरे सोच में पड़ गया। आखिर उसे एक तरीका सूझा।

उस इलाके के एक पर्वत पर चिमाइरा नाम का एक अजीबोगरीब राक्षस रहता था । जोबेटस ने बेल्लोरोफन को उसी से भिड़ाने की सोची । उसने उसे बताया कि उसकी जनता चिमाइरा नाम के राक्षस से त्रस्त है । वह बहुत ही क्रूर है । अगर बेल्लोरोफन उस राक्षस से उसकी जनता को निजात दिलवा सके तो वह उसका बहुत एहसान मानेगा ।

बेल्लोरोफन उस काम के लिए फौरन तैयार हो गया और उस राक्षस से निपटने के लिए उस पर्वत की ओर चल पड़ा । चिमाइरा एक विचित्र जीव था । उसके अपने सर के अलावा दो और सर थे, एक सिंह का और दूसरा बकरे का । उसके मुंह से आग की लपटें निकलती थीं जो सामने वाले को स्वाहा कर देती थीं ।
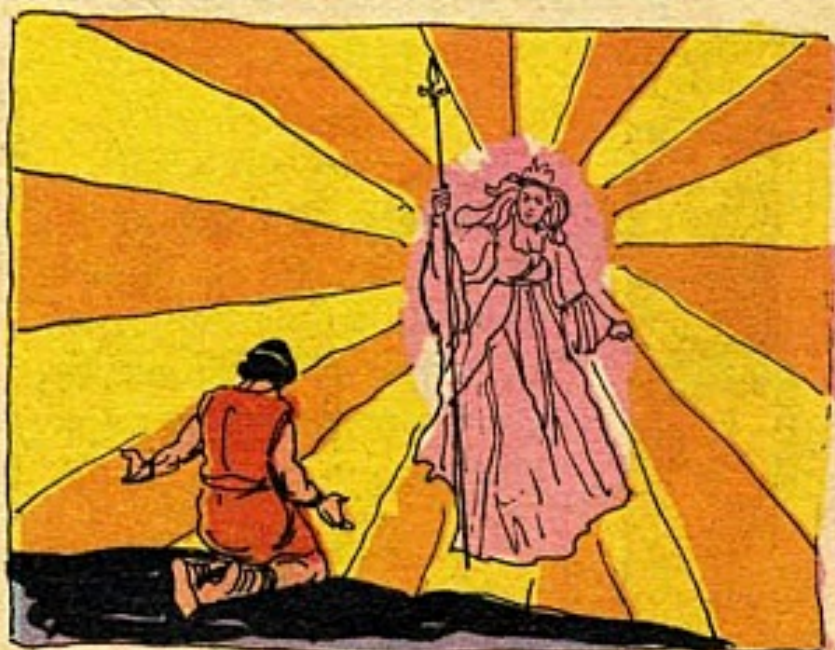
बेल्लोरोफन ने उस राक्षस को दूर से देखा और हैरान रह गया । इसे कैसे खत्म किया जाये, इस सोच ने उसे बड़ी असमंजस में डाल दिया । आखिर वह अपनी इष्ट देवी मिनरवा के ध्यान में बैठ गया । देवी मिनरवा प्रसन्न हो कर प्रकट हुई और उसे बरदान में पेगासस नाम का एक उड़नेवाला घोड़ा भेंट में दे गयीं ।

यह एक अद्‌भुत घोड़ा था। देखते ही देखते हवा से बातें करने लगता था। किसी विपत्ति के सामने घबराता नहीं था। उस घोड़े को पाकर बेल्लोरोफन का साहस चौगुना हो गया, और वह राक्षस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया।
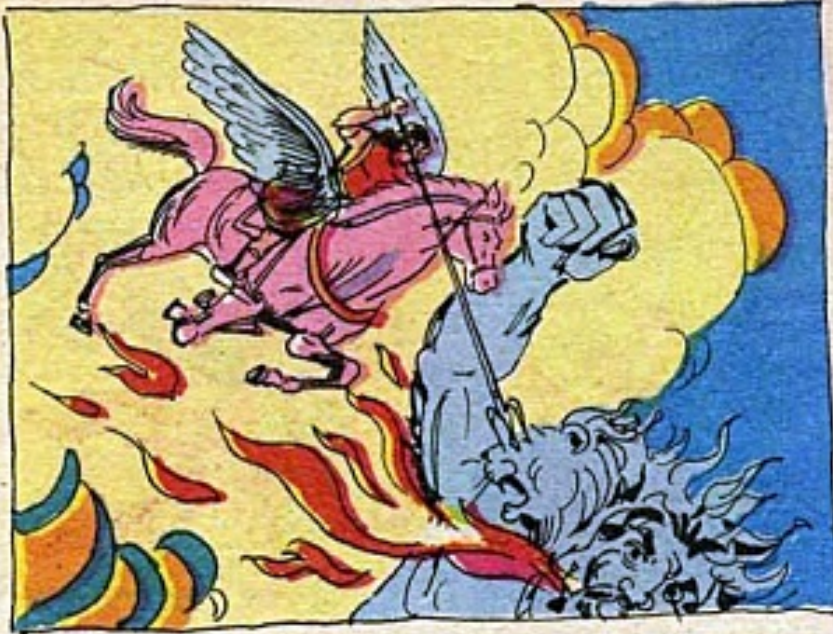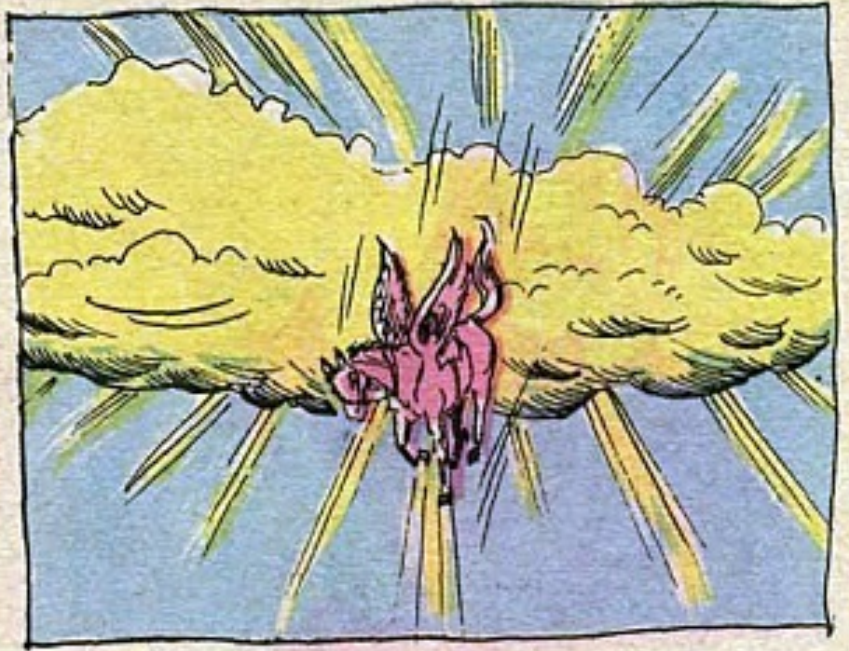
पेगासस पर बैठकर बेल्लोरोफन अब चिमाइरा से भिड़ने आगे बढ़ा। दोनों के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। बेल्लोरोफन का घोड़ा बेल्लोरोफन के बहुत काम आ रहा था। चिमाइरा जैसे ही अपने मुंह से आग की लपटें छोड़ता, घोड़ा उड़कर एकदम ग़ायब हो जाता। इससे बेल्लोरोफन बड़ी आसानी से चिमाइरा पर वार पर वार करता गया।

चिमाइरा को आखिर बेल्लोरोफन से हार माननी पड़ी। बेल्लोरोफन विजयी हो गया था। वह खुशी-खुशी राजा जोबेटस के यहां लौटा। राजा जोबेटस ने खूब ठाट-बाट से उसका स्वागत किया और फिर उसे कुछ और खतरनाक काम सौंप दिये।

इस बीच जोबेटस की छोटी बेटी बेल्लरोफन को अपना दिल दे बैठी थी। होते-होते इसकी खबर जोबेटस को भी लग गयी थी। जोबेटस भी धीरे-धीरे बेल्लोरोफन को पसंद करने लगा था। क्योंकि उसकी वीरता से जोबेटस बहुत प्रभावित था।

राजा जोबेटस बेल्लोरोफन की वीरता के लिए उसे पुरस्कृत करना चाहता था। पुरस्कार-स्वरूप उसने अपनी बेटी की शादी ही उससे कर दी। बड़ी धूमधाम से शादी का जशन मनाया गया। इस जशन में राजा प्रोइटस भी मौजूद था। जोबेटस समझ सकता था कि प्रोइटस के मन की दशा उस समय क्या होगी! वह तो जल-भुनकर राख हो रहा होग!
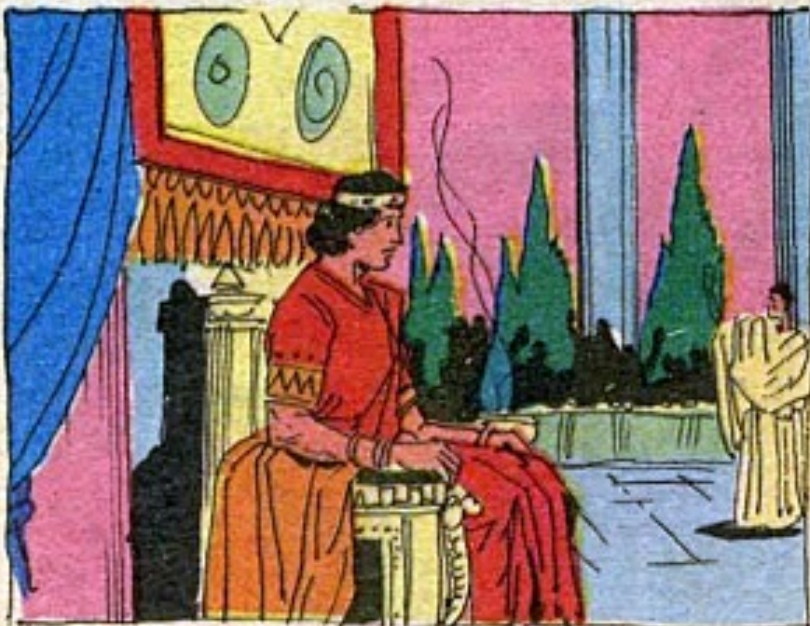
जोबेटस के कोई पुत्र-संतान नहीं थी। वह अब बेल्लोरोफन को अपने पुत्र-समान ही मानने लगा था। वक्त आने पर बेल्लोरोफन को ही लिसिया के राज्य-सिंहासन पर बैठाया गया। बेल्लोरोफन ने लंबे समय तक वहां शासन किया।

# अच्छा सबक सिखाया!

चंदनपुर गांव का पटेल बीरसिंह बड़ा ही दुष्ट था । मजबूर-बेकसूर लोगों को सताकर उसे बड़ा संतोष मिलता ।

उसी गाँव में किशन नाम का एक भोलाभाला युवक था । उससे बीरसिंह एक दिन बोला, "अरे किशनू! कहाँ रहते हो? मेरे घर आया करो । किसी काम में हाथ बंटाया करो । देखना, भगवान् तुम्हें बहुत फल देगा!"

किशन ने बीरसिंह की बात पर यक़ीन कर लिया और उसके घर में मुफ्त में चाकरी करने लगा ।

चंदनपुर गाँव में शिवनाथ नाम के वैद्यजी भी रहते थे । वह रोगियों का अक्सर मुफ्त इलाज ही करते । इलाज में पैसा कभी आड़े न आता । बीरसिंह को यह भी अच्छा न लगा । उसे लगा, इस में भी वैद्यजी की कोई चाल होगी । और तो और, इसी बात को लेकर उसने वैद्यजी की खिल्ली उड़ानी शुरू कर दी – "अरे यह वैद्य जी! ज़रूर पिछले जन्म में इसने बड़े पाप किये होंगे । उन्हीं का बदला चुका रहा है! या हो सकता है इसने हर किसी से ऋण लिया हो!"

एक दिन उसकी नज़र गाँव के अध्यापक पर पड़ी । बेचारा बड़ी मेहनत से बच्चों को पढ़ाता । बीरसिंह उससे बोला, "जानते हो मरने के बाद तुम्हारे जैसे लोगों का क्या हश्र होता है?"

अब वह सीधा साधा अध्यापक क्या जाने! उसने मासूमियत में अपना सर हिला दिया ।

इस पर बीरसिंह ही बोला, "मरने के बाद तुम्हारे जैसे लोग पिशाच बनते हैं । विश्वास नहीं हाता तो इन्हीं बच्चों से पूछ लो जिन्हें तुम पढ़ाते हो ।"

इस पर बच्चे ठहाका मारकर हंस पड़े ।

वीरसिंह इस तरह सभी की खिल्ली उड़ाता और इसमें उसे बड़ा मज़ा आता । लोग

सरिता जैन
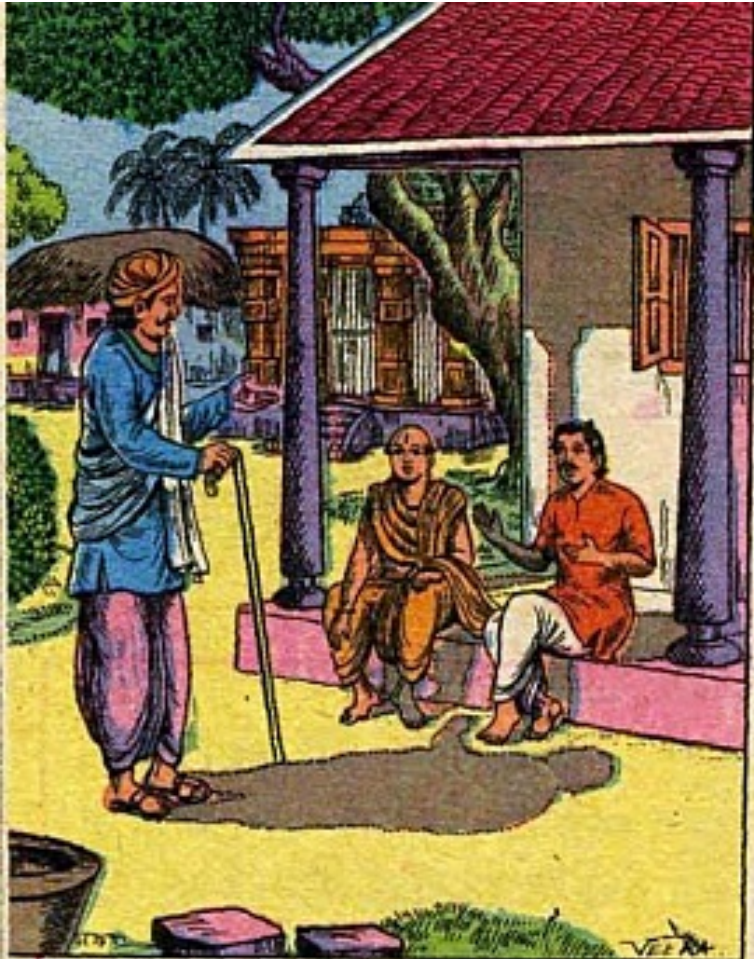
इसलिए चुप रहते कि चलो, गाँव का पटेल है! इससे रार बढ़ाने से क्या फायदा! और इस से, हो सकता है कोई फिज़ूल की परेशानी खड़ी कर दे!

गाँव में राम मंदिर भी था । उसके पुजारी का नाम गोपाल शर्मा था । गोपाल शर्मा के घर एक दिन उसका एक रिश्तेदार आया । रिश्तेदार का नाम गोविंद था । गोपाल शर्मा और गोविंद एक दिन घर के बाहर चबूतरे पर बैठे बतिया रहे थे और बीच-बीच में ठहाके भी लगा रहे थे । उसी वक्त बीरसिंह वहाँ से निकला ।

अब बीरसिंह से कैसे बरदाश्त होता कि कोई इस तरह खुले मन से आपस में बातचीत करे । मारे डाह के वह अपने को रोक न सका और बोला, "अरे पुजारी जी, ऐसी कौन सी आफत तुम्हारे ऊपर आ पड़ी कि तुम इतने दुखी हो रहे हो? मुझे बताओ । मुझ से जो मदद बन पड़ेगी, करूंगा ।"

बीरसिंह का व्यंग्य-बाण पुजारी को तो लगा ही, गोविंद को ज़्यादा महसूस हुआ । वह एकदम बौखला गया । पलटकर बीरसिंह से बोला, "वाह, महोदय! गोपाल हंस रहा है तो वह आपको दुखी लगा! पहले यह बताइए, आप हैं कौन? मुझे तो आप पर तरस आ रहा है!"

बीरसिंह पीछे मुड़ा फौरन फुर्ती से बोल दिया, "ओह,माफी चाहता हूं । असल में बात यह है कि गोपाल शर्मा हंसता भी तो ऐसे कि देखनेवाले भूल कर बैठते और समझते कि यह रो रहा है ।"

गोविंद से इतना कह कर बीरसिंह और चुपचाप वहाँ से चलता बना ।

बीरसिंह के चले जाने के बाद गोविंद ने गोपाल शर्मा से पूछा, "आख़िर यह आदमी है ही कौन? लगता है, तमीज़ से बात करना जरा भी नहीं जानता ।"

तब गोपाल शर्मा ने गोविंद से कहा, "वह हमारे गांव का पटेल है । उस का स्वभाव ही कुछ ऐसा है । बड़े लोग कहते हैं न कि दुष्ट से दूर रहना चाहिए । अब उस की बात भूल जाओ, छोड़ो!"

लेकिन जल्दी यह सब भूल जाना गोविंद के बस का काम नहीं था ।

अगले दिन गांव में कोई प्रर्वदिन मनाया

गया था। गांव के बड़े-बुजुर्ग सब उस रात को चौपाल के पास जमा हुए। वहां चबूतरे पर बैठकर विशेष प्रकार की मदिरा पीने लगे। ऐसा करना उस गांव की पीढ़ी दर पीढ़ी चली आने वाली प्रथा थी।

उस समय कुछ सोचकर गोविंद जाकर पटेल की बगल में बैठ गया था।

अगले दिन पटेल के यहाँ पहुँच गया और बोला, "पटेल जी, पिछली रात मुझ से भूल हो गयी। मैंने पी रखी थी! इसीलिए मेरे मुंह से आपके लिए उलटा-सीधा निकल गया। अब आप से माफी मांगने आया हूँ। माफी मैं उन्हीं बड़े-बुज़ुर्गों के सामने मांगूंगा जो हमारे साथ चबूतरे पर बैठे थे। कृपया उन्हें बुलवाने का प्रबंध कीजिए।"

हालांकि रात को तो गोपाल और गोविंद के अलावा चबूतरे पर कई थे और गोविंद के मुंह से उल्टा सीधा कुछ न निकल था। पर बीरसिंह ने सोचा, चलो यह भी एक शोभा रहेगा। उसने गाँव के बड़े-बुज़ुर्गों को बुलवा भेजा। बुज़ुर्ग आये तो गोविंद ने कहना शुरू किया, "मैं आप सब के सामने अपना कसूर मानता हूँ। मैंने कल रात पटेल जी से कहा कि वह किशन को बंधुआ मज़दूर की तरह अपने घर में इस्तेमाल करते हैं। मैंने यह भी कहा कि यह वैद्यजी जैसे नेक इंसान को पापी कहकर उनकी खिल्ली उड़ाते हैं। और मैंने यह भी कहा कि यह सीधे-साधे मास्टर जी को पिशाच कहकर बच्चों के सामने उन्हें ज़लील करते हैं। यह मेरी गलती थी। मैंने कल रात ज्यादा पी रखी थी। नशे की बहक में सब कुछ कह गया। मैं इसके लिए माफी चाहता हूँ!"

गोविंद की बात सुनकर सब बुज़ुर्ग एक दूसरे की तरफ विस्मय से देखने लगे। फिर उनमें से एक बोला, "अरे, माफी किस बात की! हम भी तो वहीं थे। तुमने तो ऐसा कुछ भी नहीं कहा। हाँ, नशे में शायद तुम ने सोचा हो कि तुमने ऐसा कहा है!"

अब बीरसिंह के काटो तो खून नहीं। उसका सर शर्म से झुक गया था। गोविंद मन ही मन खुश था। उसे विश्वास था कि आइंदा बीरसिंह किसी का अपमान करने की जुर्रत नहीं करेगा।

# बातें बनाने वाला जीत गया

विशाल देश पर राजा कीर्तिवर्मा का शासन था । वह एक बहुत ही कुशल प्रशासक था । उसके राज्य में चारों ओर खुशहाली ही खुशहाली थी ।

विशाल देश के पड़ोस के राज्य में प्रहास नाम का एक बातूनी रहता था । जब वह विशाल देश में आया तो वहाँ की खुशहाली देखकर दंग रह गया ।

राजा से भेंट होने पर वह उससे बोला, "राजन्, बेशक आपके राज्य में बड़ी संपन्नता है । मैं उससे बेहद प्रभावित हूँ । पर आपके यहाँ बेवकूफों की भी कमी नहीं । मेरे हिसाब से इन बेवकूफों की संख्या एक सौ बारह है!"

प्रहास की बात सुनकर पहले तो राजा खामोश रहा, फिर बोला, "मेरी राजधानी के इर्द-गिर्द एक सौ बारह गांव हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि हर गाँव में एक बेवकूफ है!"

"दरअसल, आपके राज्य में कहीं कोई झगड़ा-फसाद नहीं । इसलिए ज़ाहिर है कि इन एक सौ बारह गांवों के पटेलों के दिमाग ठस होंगे!" प्रहास ने अपनी बात को आगे बढ़ाया ।

प्रहास का तर्क सुनकर राजा केवल हंस दिया ।

वहीं, राजा का दरबारी विदूषक विकटहास भी खड़ा था । उसने प्रहास की बात सुन ली थी । वह बोले बिना रह न सका । "प्रभु, इन महोदय का हिसाब ठीक नहीं । हमारे यहाँ मूर्खों की संख्या अब एक सौ तेरह हो गयी है ।"

"वह कैसे?" राजा को आश्चर्य हुआ ।

"एक सौ तेरहवें यह महोदय खुद ही हैं । यह आपकी प्रशंसा पर प्रशंसा किये जा रहे हैं, चाहे आप पर उसका असर हो या न हो । यह पुरस्कार के भूखे हैं!" विकट ने प्रहास को फटकार देते हुए से कहा ।

विकटहास की फटकार पर प्रहास विचलित नहीं हुआ । वह बोला, "मैं पुरस्कार पाने आया हूँ या नहीं, यह बाद की बात है । पर खुश होकर देंगे, प्रशंसा करने पर नहीं । और फिर चारों ओर की यह समृद्धि और संपन्नता देखकर कौन आपकी प्रशंसा करने से रह सकता है! जो आपकी प्रशंसा नहीं करेगा, वह मूर्ख है ।" प्रहास का यह तर्क सुनकर राजा कीर्तीवर्मा ठठाकर हंस पड़ा । "मैं यह निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ कि तुम्हारी ये बातें वाक्पटुता में शुमार करूँ या कि प्रशंसा में! ख़ैर तुम पुरस्कार पाने के तो हक़दार हो ही!"

और यह कहकर कीर्तिवर्मा ने अपने गले से स्वर्णमाला उतारकर प्रहास के हाथों पर रख दी ।
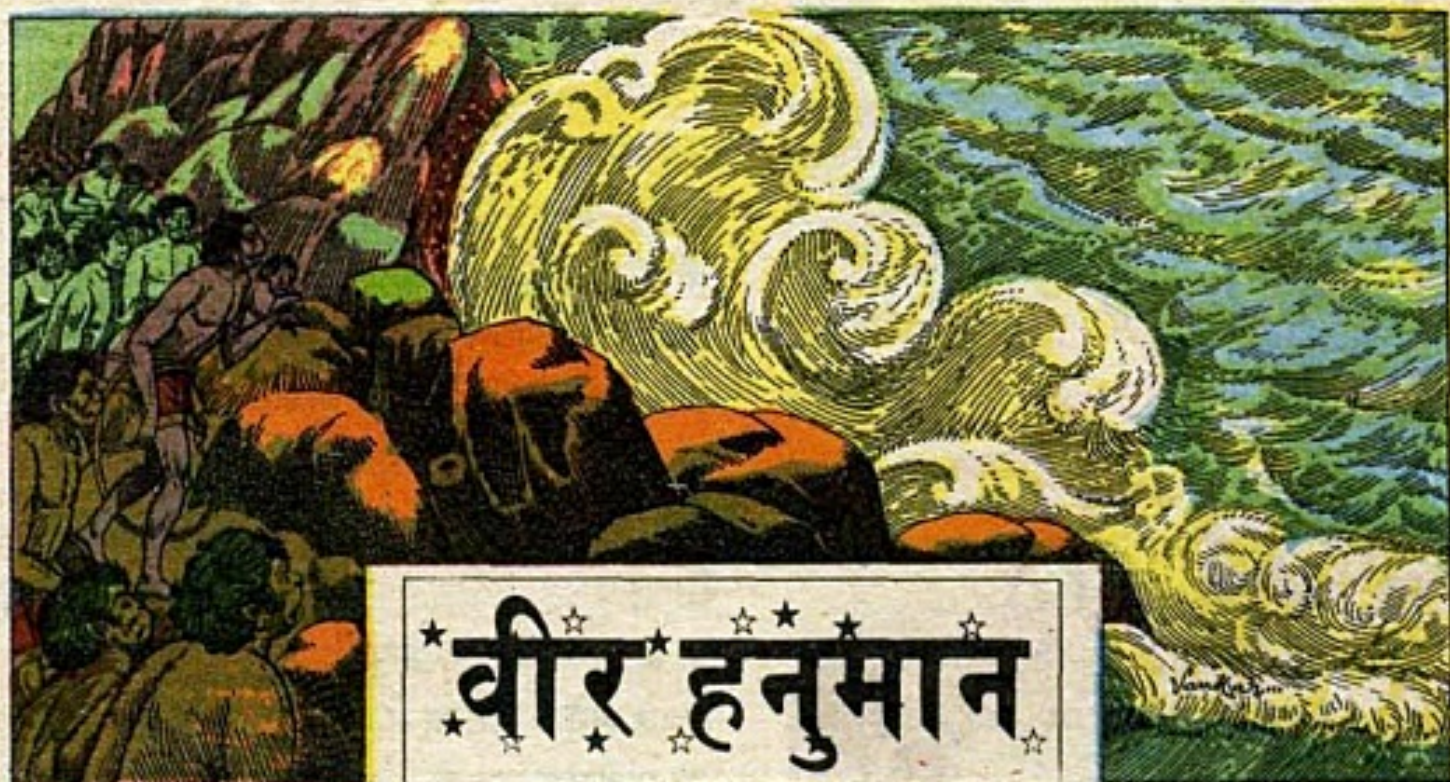
—शारदा जैन

संपाती से सीता का अता-पता पाकर वानर बहुत खुश हुए। वे उछलने-कूदने लगे और तरह-तरह की आवाजें निकालने लगे। फिर वे लंका पहुँचने के लिए सागर की तरफ बढ़े। लेकिन सागर की विशालता को देखकर उनका समूचा उत्साह जाता रहा। सागर निस्सीम था। वह बड़ा ही भयानक दिखने लगा। यह बात तो किसी से छिपी नहीं कि उस सागर के गर्भ में भयानक से भयानक और खतरनाक प्राणी रहते हैं। वह कहीं शांत दिखता और कहीं एकदम उद्दाम। उसकी ऊंची-ऊंची लहरें देखकर मन में भय पैदा होता।

अब क्या किया जाये, हर वानर के चेहरे पर जैसे कि यह प्रश्न-चिह्न जड़ा था। अंगद उन के मन की स्थिति भांप गया। उसे भली भाँति पता चल गया कि वे सभी वानर उस भयानक सागर को देखकर डर गये हैं। उसने सोचा कि ऐसे समय में उन के मन से भय को दूर कर उन्हें आश्वस्त करना बहुत जरूरी है। इसलिए उन के पास जाकर उसने उनका साहस बढ़ाते हुए कहा, "तुम इस तरह सागर को देखकर मत डरो। डर हमारा दुश्मन है। वह हमें खा जायेगा। हमारी बहादुरी दिखाने का यही समय है! अब हमारा जो काम होना है, वह सिर्फ हमारे धैर्य और पराक्रम के द्वारा ही संपन्न होगा। डर और कायरता से बनने वाले काम भी बिगड़ जायेंगे।"

उस रात वे सब वहीं सागर के किनारे रुके। सुबह हुई तो अंगद ने समूची वानर सेना को एकत्रित किया था। इस तरह वानरोंको एकत्रित करने की ताकत अंगद और हनुमान

## १०. हनुमान् का लंका के लिए प्रस्थान
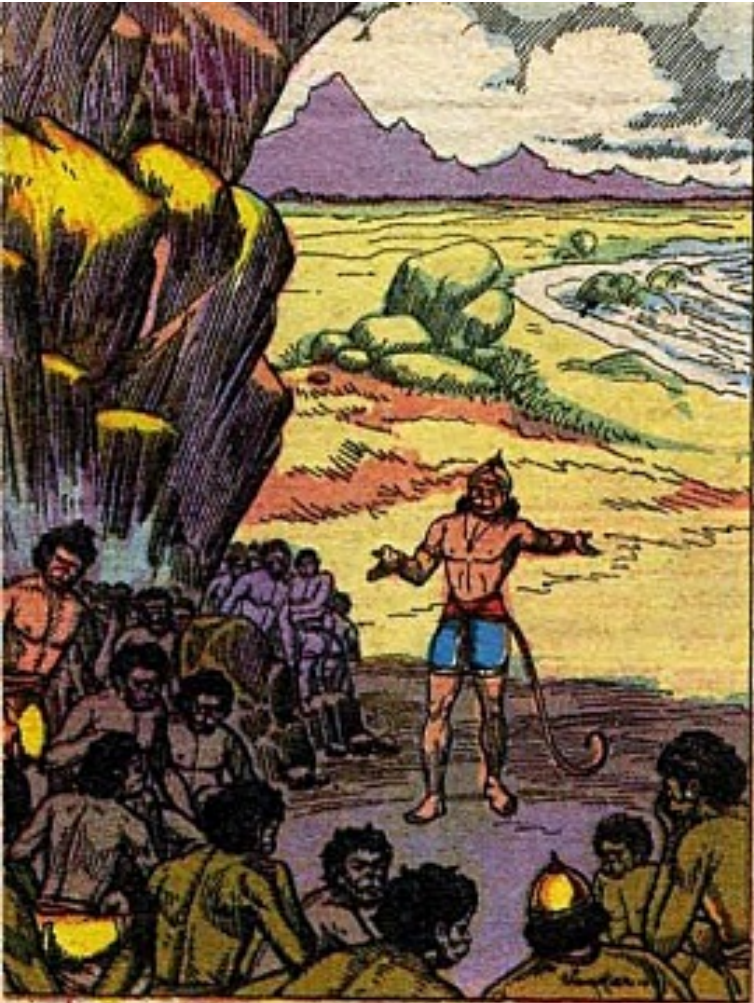
को छोड़कर किसी दूसरे में नहीं थी । अंगद ने फिर उन्हें संबोधित किया, "हम में एक से एक बढ़कर वीर हैं । लंका यहाँ से केवल एक सौ योजन की दूरी पर है । सुग्रीव को प्रसन्न करने का यही अवसर है । हम में से जो लंका पहुँचकर वहाँ से सीता की खबर ला सकेगा, वह बड़े यश का भागी बनेगा । तभी हम वापस घर पहुँच सकते हैं । तभी हमें बीवी-बच्चों से मिलने का अधिकार प्राप्त होता है । तभी हम राम-लक्ष्मण को अपना मुंह दिखा सकते हैं । तुममें से ऐसा पराक्रम कर सकने वाला वीर आगे आये । वह हम सब को हमारे तनाव से मुक्त करेगा!"

सब चुप थे । जैसे कि वे प्रस्तर-मूर्तियाँ बन गये हों ।

उन्हें देखकर अंगद से चुप न रहा गया । वह दहाड़ा, "तुम शक्तिसंपन्न हो । अपार ख्याति और यश कमाया है तुमने । तुम लोगों के पास अद्‌भुत शक्ति है । बेशक तुम्हारे जन्मों की अपनी-अपनी खासियत है । तब इस प्रकार क्यों हो? हमें केवल इतना बता दो कि तुम निर्बाध कितनी दूर जा सकते हो?"

अंगद के संबोधन से सब वानरों को बल मिला ।

वे सब अपनी-अपनी शक्ति का बखान करने लगे । गवाक्ष ने कहा कि उसकी छलांग बीस योजन तक है । गवय का कहना था कि उसकी शक्ति तीस योजन तक सीमित है । शरभ ने कहा कि वह चालीस योजन तक कूद पायेगा । इसके बाद गंधमादन ने अपनी शक्ति पचास योजन, मैंद ने साठ योजन, द्विविद ने सत्तर योजन और सुषेण ने अस्सी योजन तक बतायी ।

सब बोल चुके तो जांबवान बोला, "एक समय था जब मेरी शक्ति की कोई सीमा न थी । लेकिन अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ । फिर भी मैं कोशिश करूंगा । आखिर, यह श्रीराम का कार्य है । मैं उनके लिए अपने को किसी भी खतरे में डाल सकता हूँ । बिना आज्ञा-पालन के यह शरीर किस काम का! मुझे आदेश होगा तो मैं नब्बे योजन तक कूद जाऊंगा!"

"फिर भी दस योजन की कमी तो रह ही जायेगी, "अंगद ने जांबवान की बात सुनकर कहा । "चलो छोड़ो आप सब! मैं स्वयं ही सौ योजन जाऊंगा । लेकिन मुझे एक संदेह है ।

मैं सौ योजन कूदकर वहां पहुँच तो जाऊंगा, पर क्या मैं लौट सकूंगा?''

''तुम्हारी ताकत का किसे अंदाज़ा नहीं!'' जांबवान ने अंगद की उक्ति पर टिप्पणी की, ''सौ योजन तो क्या, तुम हज़ार योजन भी पार कर सकते हो! फिर तुम सकुशल लौट भी सकते हो। हमें इस पर रत्ती-सा भी संदेह नहीं। पर तुम युवराज हो। इसलिए हम तुम्हें जाने को नहीं कह सकते। यह काम तो हम में से ही किसी को करना चाहिए। यदि नायक ही हर काम स्वयं करेगा, तो उससे आदेश लेने वाले क्या करेंगे। फिर, तुम्हारे कुशल-क्षेम की चिंता करना हमारा कर्तव्य है। इसलिए तुम नहीं जाओगे। और हां, तुम लंका चले जाओगे तो यहां हमारे बारे में सोचने वाला कौन रहेगा? नायक के बिना इस सारी सेना का क्या होगा?''

जांबवान की बात सुनकर अंगद परेशान हो गया।

फिर उसने जांबवान से कहा, ''सागर मैं भी पार न करूँ, तुम भी न करो, तब कौन करेगा? इस तरह पसोपेश में पड़े रहने से काम नहीं चलेगा। तब हम सुग्रीव के सामने कैसे जायेंगे? किष्किंधा में कैसे लौटेंगे? हमारी जान कौन बख्शेगा? ऐसी हालत में यदि हम किष्किंधा में लौट चलें तो भी हम जिंदा रह पायेंगे, ऐसी कोई आशा नहीं। तुम हम सब में बड़े हो, अब तुम ही कोई रास्ता बताओ!''

''हिम्मत न हारो, भाई, हिम्मत न हारो,'' जांबवान ने अंगद की दिलजोई करते हुए कहा, ''काम तो यह होगा ही। इस काम को सफलतापूर्वक पूरा करने वाला भी हमारे बीच में है। मैं अभी तुम्हें बताता हूँ।'' तब उसने एक तरफ चुपचाप बैठे हनुमान की ओर इशारा किया।

और फिर उसे संबोधित करते हुए जांबवान बोला, ''हे हनुमान्, तुम वानरवीरों में महान हो। सभी शास्त्रों के तुम ज्ञाता हो। फिर तुम क्यों इस तरह चुप हो, जैसे कि इस सब से तुम किसी तरह नहीं जुड़े हो! हनुमान! तुम्हारी भुजाओं में गरुड़ के पंखों का बल है। तुम महान् पराक्रमी हो। सुग्रीव और लक्ष्मण से तुम किसी तरह कम नहीं। अन्य प्राणियों में तुम्हारे सामने कोई टिक नहीं

सकता । जन्म लेते ही तुमने सूरज को फल समझकर निगलने की कोशिश की और इसी प्रयास में तुमने आकाश की ओर उड़ान भरी! फिर इस सागर को पार करना तुम्हारे लिए कौन सी बड़ी बात है? क्या मैं नहीं जानता कि तुम्हारी ताकत क्या है? मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम यह काम कर सकते हो । तुम्हें छोड़ इस काम को और कौन कर सकता है! आओ अब अपने पराक्रमी रूप में और हरो हमारी चिंता!"

अपनी इतनी स्तुति सुनकर हनुमान के शरीर में जैसे कि एकदम अद्‌भुत फुरफुरी भर गयी । उसका आकार धीरे-धीरे बढ़ने लगा ।

उसके इस विस्तृत होते रूप को देखकर सभी वानर संतुष्ट हुए । वे मन ही मन उसकी आरती उतारने लगे । कुछ वानर तो अपना आनंद मन में छिपा नहीं सके, इस लिए आनंद परवशता में वे हनुमान की प्रशंसा करने लगे, ऊंची-ऊंची आवाज़ में हनुमान की अद्‌भुत शक्ति की तारीफ करने लगे । जैसे-जैसे वे वानर जोर से हनुमान की प्रशंसा करने लगे, तैसे-तैसे हनुमान का शरीर और-और बढ़ता जाने लगा ।

हनुमान का शरीर अब पूरी तरह बढ़ चुका था । वह पूरे उत्साह में था और वह सिंहनाद कर रहा था । उसका चेहरा एकदम सुर्ख हो रहा था । वह बिना धुआं के अग्नि का रूप लिये हुए था ।

अब वह अपनी जगह से उठा और वृद्ध वानरों का अभिवादन करते हुए बोला, "मैं सागर को ऐसी सुगमता से पार करूंगा जो केवल वायु के लिए ही संभव है । बीच में मुझे कहीं रुकने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी । मैं, जैसे ही सूरज उदय होगा, वैसे ही चल पड़ूंगा और उसके डूबने से पहले ही वापस, बीच राह में, उससे आ मिलूंगा । मैं जिस वेग से आकाश में उड़ूंगा, सागर मेरा मुंह ही ताकता रह जायेगा । आकाश में बादल होंगे, वे सब तितर-बितर हो जायेंगे । अगर वहाँ कहीं पहाड़ होंगे, तो वे कंपायमान् हो जायेंगे । मैं माँ सीता को ज़रूर खोज निकालूंगा । मुझे सभी लक्षण शुभ दिख रहे हैं । ज़रूरत पड़ेगी तो मैं समूची लंका को उखाड़ डालूंगा और उसे वैसे ही अपने कंधे पर लादकर ले

आऊंगा ।"

हनुमान इस प्रकार बोल रहा था तो वानर आनंद-विभोर होने के साथ आश्चर्यचकित भी हो रहे थे ।

उत्साह से अब जांबवान ने हनुमान की फिर स्तुति की, "पुत्र, तुमने हमारी चिंता दूर की । हम सब ईश्वर का ध्यान करेंगे कि वह तुम्हारे प्रयास को सफल करे । हम सब का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है । तुम सागर लांघकर उस पार जाओ । हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे और इस प्रतीक्षा में अपनी आंखें बिछाये रहेंगे ।"

हनुमान जल्दी से महेंद्र पर्वत पर चढ़ने को हुआ और चढ़ने से पहले बोला, "जिस समय मैं ऊपर उठूंगा, धरती मेरे पावों की थाप सह नहीं पायेगी । इसलिए मैं ऊपर पर्वत से उड़ान भरूँगा ।"

इतना कहकर हनुमान जल्दी-जल्दी महेन्द्र पर्वत तर चढ़ने लगा । वह देखने-देखते पर्वत के शिखर पर पहुंच गया था ।

महेंद्र पर्वत के शिखर पर पहुँचकर हनुमान ने उड़ान भरने से पहले अपने हाथ-पांवों को जोर से हिलाकर अपनी ताकत का अंदाज़ा लगाना चाहा । उसके इस प्रकार हिलने-डुलने से निश्चल रहने वाला पर्वत एकाएक सिहर उठा । उस पर जो भी पेड़-पौधे थे, उनके फूल झड़कर नीचे आ गिरे ।

इसी प्रकार पर्वत पर जो पत्थर पड़े थे, वे अपने आप बड़ी आवाज के साथ लुढ़कने लगे । ऐसे ही उस पहाड़ की गुफाओं में अनेक जानवर जी रहे थे । वे इस भयानक आवाज़ पर एकदम डर गये और गुफाएं छोड़कर जान बचाने के लिए दौड़ने लगे ।

उसकी-कंदराओं में ऋषि-मुनि और विद्याधर भी रहते थे । उन्हें भी ऐसे लगा जैसे कि पर्वत कहीं बीच में से टूट जायेगा । फिर उनकी निगाह अचानक आकाश की ओर उठी । हनुमान की विशाल काया देखकर वे दंग रह गये ।

हनुमान हवा में उड़ान भरते समय, पूंछ हिलाकर और सांस पकड़कर, आकाश का मार्ग देंखते हुए वानरों से बोला, "मैं अब लंका के लिए प्रस्थान कर रहा हूं । अगर वहां सीता

दिखाई नहीं देती तो मैं वहां से सीधे स्वर्ग को ही चल पड़ूंगा । । वहां भी यदि सीता नहीं मिली तो मैं सीधे लंकाको वापस आऊंगा और रावण को पकड़कर ले आऊंगा । या रावण समेत पूरी लंका को ही ले आऊंगा ।"

जिस समय हनुमान आकाश में उड़ा था, उस समय उसके साथ महेन्द्र पर्वत पर स्थित कुछ पेड़ भी उड़े थे ।

सागर में पत्ते ही पत्ते और फूल ही फूल हो रहे थे । उसकी फैली हुई भुजाएँ पांच सर वाले सर्पों के समान दिखती थीं । उसकी आंखें सूरज और चंद्रमा का एकसाथ भ्रम दे रही थीं । उसकी ऊपर उठी पूंछ की अपनी ही छटा थी ।

हनुमान जिस समय आकाश में उड़ रहा था, उसके अति-तीव्र वेग के कारण उसके नीचे से होकर जाने वाली हवा मेघगर्जन-सी सुन पड़ती थी । लंका के लिए तो वह एक पुच्छल तारे के समान था जो उनके विनाश का सूचक था । वह जिस दिशा में जा रहा था, उस दिशा में सागर में उफान उठने लगा ।

इस प्रकार वेग से जाते हुए हनुमान को देखकर सागर को लगा कि उसे भी हनुमान की मदद करनी चाहिए । यह भी कौन-से अपने काम पर जा रहा है! यह तो इक्ष्वाकु वंशज राम के काम से ही जा रहा है! सगर भी तो इक्ष्वाकु वंशी था । सगर के नाम पर ही तो सागर नाम पड़ा । उसी ने तो सागर का उद्धार किया । निश्चय ही हनुमान के विश्राम के लिए बीच सागर ही कुछ व्यवस्था होनी चाहिए । और उसी विचार से उसने मैनाक पर्वत से कहा, "हे मैनाक, तुमसे इंद्र ने कहा था कि तुम पाताल से राक्षसों को बाहर नहीं आने दोगे और वहीं बंद रखोगे । अब तुम्हें ऊपर उठना ही होगा । हनुमान इसी ओर उड़ता आ रहा है । वह तुम्हारे ऊपर से उड़ेगा । वह कहीं यहाँ से उड़ता हुआ निकल न जाये, इसलिए तुम फौरन ऊपर उठो । तुम्हें ऊंचा उठा देखकर वह शायद तुम्हारे सोनल शिखर पर आराम करना चाहे । थोड़ी देर भी आराम कर लेगा, तो फिर तरोताज़ा हो जायेगा ।"

सागर की बात सुनते ही मैनाक तुरंत ऊपर उठा और उठता ही चला गया । उस समय वह पूर्व से उगने वाले सूर्य के समान दिख रहा
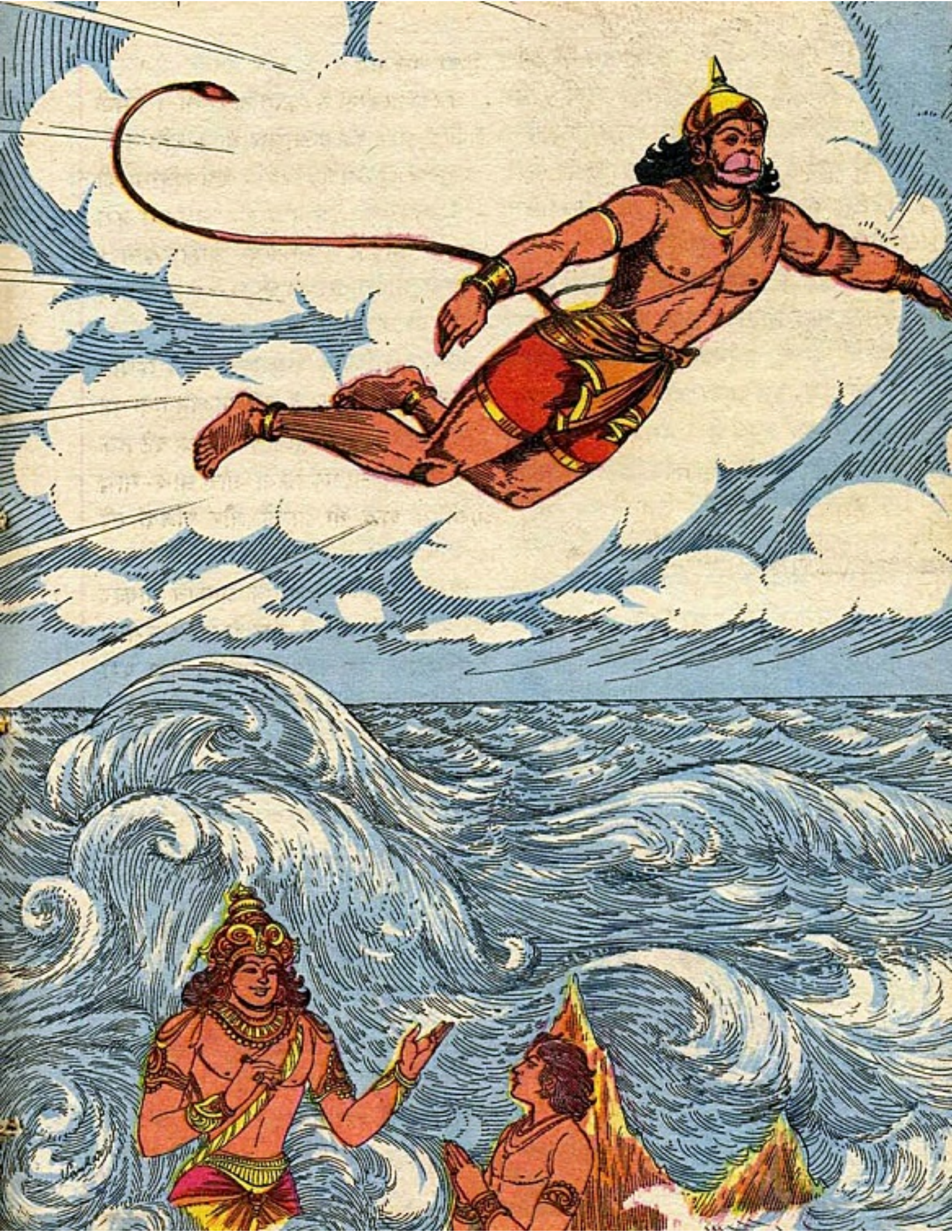
था। लेकिन हनुमान की जब उस पर आंख पड़ी, तो उसे यह अच्छा नहीं लगा। उसे लगा जैसे कि यह पर्वत उसका रास्ता रोकना चाह रहा है। उसने ज़ोर से हुंकार भरी, जिससे पर्वत को ज़बरदस्त का धक्का लगा और वह लुढ़कने को हुआ।

हनुमान के इतने बल का एकसास पाकर मैनाक बड़ा आनंदित हुआ और मुनष्य-रूप धारण करके हनुमान से अनुनय-विनय करता हुआ इस प्रकार बोला, "हे हनुमान, तुम्हारा बल अपूर्व है। तुम सागर को ऐसे लांघ रहे हो जैसे कि वह कोई छोटा-सा नाला हो। यह किसी प्राणी के लिए संभव नहीं। निरंतर उड़ते हुए भी तुम्हारी शक्ति में कोई कमी नहीं आयी, बल्कि तुम तो धक्का देकर मुझे ही गिरा देते हो। खैर, अब तुम थोड़ी देर के लिए मेरे शिखर पर विश्राम करो। इक्ष्वाकु वंश के सगर ने और उसके वंशजों ने सागर की बहुत भलाई की। अब तुम इक्ष्वाकु वंशी राम के कार्य से जा रहे हो। इसलिए सागर तुम्हारा सत्कार किये बिना रह नहीं सकता। वह सगर वंश के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता है। इसलिए तुम थोड़ी देर के लिए यहाँ रुककर विश्राम करो। फिर तुम अपनी राह चले जाना। यही हमारी बिनती है। इसे मत ठुकराना।"

हनुमान् ने जब मैनाक को कोई उत्तर नहीं दिया तो मैनाक फिर बोला, "तुम वायुदेव के पुत्र हो; इसलिए भी तुम्हारा सत्कार करना हमारा कर्तव्य है। कृतयुग में पर्वतों के पर हुआ करते थे। वे जब आकाश में उड़ने लगते तो नीचे रहे मुनि और देवता इस विचार से भयभीत हो गये कि वे उन्हीं के नीचे दब न जायें। इसी कारण देवेंद्र ने अपने वज्रायुध से अनेक पर्वतो के पर काट डाले। वह जब मेरे भी पर काटने को हुए तो वायुदेव ने मुझे परे धकेल दिया ताकि मैं बच जाऊँ, और मैं लुढ़कता पड़ता यहाँ इस सागर में आ पड़ा। इसलिए वायुदेव के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ और उनका एहसान चुकाना चाहता हूँ। तुम्हारा सत्कार करके मैं कुछ तो उऋण हो पाऊंगा। मुझे एक अवसर ज़रूर दो!"

# शिवजी की कृपा!

एक छोटा-सा गांव है नंदीगांव। वहां नरसिंह नाम का एक नारियल का व्यापारी रहता था। उसकी शादी हाल ही में हुई थी। उसकी पत्नी का नाम था नर्मदा।

नर्मदा गरीब परिवार से आयी थी, पर स्वभाव की बहुत अच्छी थी। लेकिन नरसिंह बड़े अजब स्वभाव का था। पति को पत्नी के प्रति कैसे व्यवहार करना चाहिए, इस के बारे में नरसिंह की विचित्र धारणा थी। वह सोचता था कि पत्नी से निरंकुश बनकर रहना चाहिए, तभी वह ठीक रहती है। ढील दी नहीं, और मामला बिगड़ा नहीं। पत्नी की तो इतनी हिम्मत भी नहीं होनी चाहिए कि वह पति के सामने अपना मुंह ज्यादा खोले।

पति के घर आने के दूसरे दिन उसने पति से कहा, "आप शाम को जल्दी आ जाइएगा। हम साथ शिवजी के मंदिर चलेंगे।"

नरसिंह हर वक्त तना रहता। वह पत्नी की बात सुनकर तुनककर बोला, "क्या मतलब है तुम्हारा? मैं जल्दी आऊं या देर से, इससे तुम्हें क्या लेना-देना! तुम्हारा जो काम है, तुम उससे मतलब रखो।" और यह कहता हुआ वह घर से चला गया।

पति का उत्तर सुनकर पत्नी भौंचक रह गयी। वह तमाम दिन आंसू बहाती रही। वह सोचती रही कि पति के ऐसे उत्तर का कारण क्या है। इसी परेशानी में वह सारा दिन उलझी रही, उस ने उस दिन खाना भी नहीं खाया। पति के स्वभाव के बारे में सोचती हुई वह खोयी-खोयी रही।

इसी तरह एक पखवाड़ा बीत गया। अब तक नर्मदा जान गयी थी कि कड़ाई से बोलना पति का स्वभाव ही है। दूसरे, पति की यह धारणा थी की पत्नी को ज़्यादा मुंह नहीं लगाना चाहिए, इससे वह सर चढ़ जाती है।

एक दिन सूरज डूब ही रहा था कि महादेव

सरिता श्रीवास्तव

चाचा उनके घर आये । वह नर्मदा के पिता के मित्र थे और गांव के बाहर टीले पर बने शिवजी के मंदिर के पुजारी थे । वह नर्मदा की शादी पर नहीं आ सके थे, क्योंकि उस समय उनकी पत्नी बीमार थी । अब किसी काम से गांव के भीतर आये थे तो उन्होंने सोचा चलो, नर्मदा को भी देखते चलें ।

नर्मदा घर में प्रायः गुमसुम ही रहती थी । वहां बात करने वाला कोई नहीं होता था । नरसिंह तो बात करने में विश्वास ही नहीं रखता था । घर पर रहता भी तो अजनबियों की तरह । इसलिए महादेव चाचा को चौखट पर खड़ा देखकर नर्मदा बहुत खुश हुई । उसने उन्हें आदर से घर में भीतर बैठाया और सब का कुशल-क्षेम पूछा । चाची के बारे में भी उसने पूछताछ की और उन्हें पानी का गिलास थमाकर भीतर नरसिंह को खबर देने चली गयी । नरसिंह अपने हिसाब-किताब में लगा था । महादेव के आने की खबर पाकर वह आग-बबूला हो गया । नर्मदा अभी कुछ और कह भी न पायी थी कि नरसिंह अंट-संट बकने लगा और चीखता हुआ बोला, "क्या कहा? उसे खाना खिलाकर भेजोगी! क्यों, घर में मुफ्त का माल आता है क्या? मुझे किसी बाहर वाले से तुम्हारा मेल-जोल बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा । उसे यहां से चलता करो, और आइंदा किसी को घर पर बुलाने की जुर्रत भी नहीं करना, वरना मुझ से बुरा कोई न होगा!"

नर्मदा को पति की बात से बहुत चोट लगी । वह तिलमिला उठी । वह यह सोचकर भी परेशान हो रही थी कि अगर महादेव चाचा सुन लेंगे तो क्या कहेंगे! अगर वह यह सब उसके पिता को बता दें तो उन्हें कितना दुःख होगा!

यह सब सोचते हुए नर्मदा ने पति से कहा, "ज़रा धीरे बोलिए ।"

नरसिंह और बौखला उठा, "ज़बान पर लगाम दो । जिस घर में बीवी की चलती है, वह घर श्मशान हो जाता है! समझी! अब तुम जाओ यहां से ।"

महादेव ने पति-पत्नी की बातें सुन ली थीं । नर्मदा को वह पुकारते हुए बोला, "नर्मदा बेटी, मैं जा रहा हूं । दरवाज़ा बंद कर लो ।"

नर्मदा दरवाज़े तक आयी और आंसू पोंछते हुए बोली, "चाचा, आप ने यहां जो कुछ भी सुना और देखा, उसे भूल जाइए । इन बातों का कहीं भूलकर भी ज़िक्र मत कीजिएगा ।"

"दु:खी मत हो, बेटी, शिवजी तुम्हारे दु:ख दूर करेंगे ।" महादेव चाचा वहां से कहते चले गये ।

एक महीना ऐसे ही बीत गया । महादेव को गांव में फिर आना पड़ा । वह नरसिंह के यहां भी आये । उन्हें देखते ही नरसिंह उन्हें पहचान गया और बोला, "पुजारी चाचा, आप यहां कैसे?"

"बेटा, हम शिव मंदिर के अहाते में एक नारियल की दुकान खोलना चाहते हैं । वहीं पास में रहने की व्यवस्था भी हो जायेगी । इस दुकान पर कम से कम पचास नारियल तो रोज़ बिकेंगे ही । फूल और अगरबत्ती भी वहां रखी जाये तो और ज़्यादा आमदनी हो सकती है । मैं चाहता हूं यह काम तुम ही करो ।" महादेव ने अपने आने का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा ।

नरसिंह को यह प्रस्ताव अच्छा लगा । नर्मदा भी ये सब बातें सुन रही थी । फिर भी नरसिंह ने उसे बुला कर सब कुछ विस्तार से बताया और महादेव पुजारी के साथ चल पड़ा । जब वे मंदिर के अहाते में पहुंचे तो सूरज डूब चुका था और चारों ओर अंधेरा छाने लगा था ।

नरसिंह को नयी दुकान और नये आवास का मौका पसंद आया । महादेव के कहने पर मंदिर के संरक्षकों ने वह दुकान और रहने की

जगह सौ रुपये माहवार किराये पर देना मंज़ूर कर लिया ।

नरसिंह और महादेव अब मंदिर से बाहर आये । क्योंकि अंधेरा बहुत ज़्यादा हो चुका था, इसीलिए महादेव पुजारी ने नरसिंह को सुझाया कि वह वापस जाने के बजाय वहीं उन्हीं के घर पर रात काट ले और सुबह होते ही चला जाये । उन्होंने यह भी कहा कि शिवरात्रि ज़्यादा दूर नहीं है, इसलिए इस विषय पर भी बात करनी होगी । फिर बोले, "मैं तुम्हारे साथ नहीं चल पाऊंगा । थोड़ा बाद में आऊंगा । मेरे घर का पता लगाना कोई मुश्किल नहीं । टीले से जैसे ही नीचे उतरोगे, तुम्हें वहां दो रास्ते मिलेंगे । बायीं ओर के रास्ते पर जो पीपल का पेड़ मिलेगा, ठीक उसी के सामने मेरा घर है । तुम वहां

विश्राम करना । मैं जल्दी ही पहुंचूंगा ।"

नरसिंह जब टीले से नीचे आया तो रात और भी गहरी हो चुकी थी । फिर अचानक बारिश भी शुरू हो गयी । वह बायीं ओर के रास्ते पर पीपल के पेड़ के सामने वाले पुराने खपरैल के मकान पर पहुंचा । बारिश अब और भी तेज़ हो गयी थी ।

नरसिंह ने दो-तीन बार दरवाज़ा खटखटाया । आखिर दरवाज़ा खुला । दरवाज़ा खोलने वाला एक बूढ़ा था । उसके हाथ में एक छोटा-सा दीया था । उसने पूछा, "किसे ढूंढ़ रहे हो बेटा?"

"क्या यह महादेव पुजारी का घर है?" नरसिंह ने झिझकते हुए पूछा ।

"उनके घर बगल वाली गली में है । तुम तो बारिश में बहुत भीग गये हो । भीतर आ जाओ," बूढ़े ने स्नेह-भरे स्वर में कहा ।

नरसिंह भीतर चला गया । अचानक उसके मन में एक विचार आया । पहली बार जब महादेव पुजारी उसके घर आये थे, तो अतिथि-सत्कार करने के बजाय उसने उनके साथ विचित्र व्यवहार किया था! क्या अब उसके यहाँ जाकर अतिथि-सत्कार की उम्मीद करना गलत नहीं होगा?

इस विचार के उसके मन में आते ही उसने उस बूढ़े से कहा, "लगता है इस बारिश में मैं महादेव चाचा के यहां नहीं पहुँच पाऊँगा । बारिश तो थम ही नहीं रही । अगर मैं यहीं लेट जाऊं तो आपको कोई एतराज़ तो नहीं होगा!"

"मुझे एतराज़ कैसा, बेटा!" बूढ़े ने तत्परता से उत्तर दिया । वहां खाट पड़ी है, उसी पर लेट जाओ । मैं इधर लेट जाता हूँ । भगवान् की लीला का क्या कहना, बेटा । चार-चार बेटे हैं मेरे, और फिर भी मैं इस तरह बेसहारा पड़ा हूँ ।" और इन शब्दों के साथ ही बूढ़े की आंखों से आंसू झरने लगे ।

काफी रात गये तक वह बूढ़ा नरसिंह को अपनी आपबीती सुनाता रहा । उसने नरसिंह को बताया कि जब वह जवान था, तो वह बड़ा क्रोधी था । आखिर बच्चों के प्रति भी वह बड़ा कठोर था । वह हर तरह की कड़ाई बरतता था । बच्चे बड़े हुए तो अपने-अपने काम पर लग गये । कुछ को दूर के शहरों में भी जाना पड़ा । अब पत्नी और वह अकेले

रह गये थे। जब उसकी पत्नी भी चल बसी तब वह बिलकुल ही अकेला पड़ गया। फिर होते-होते बेटों से नाता ही टूट गया।

बूढ़े की आंखों से आंसू लगातार बह रहे थे। वह बोला, "यह सब मेरी अपनी भूल है। यदि मैंने उन सब को प्यार दिया होता तो आज मेरी यह हालत न होती।"

यह सब सुनने के बाद नरसिंह का मन विचलित हो उठा। बहुत देर तक नींद नहीं आयी। जब सुबह होने को थी, तब कहीं उसकी आंख लगी। लेकिन अभी वह मुश्किल से ही दो-तीन घंटे सो पाया था कि किसी ने उसकी पीठ थपथपायी। उसने आंखें खोलीं तो वहां महादेव पुजारी को पाया। अब तक दिन काफी चढ़ चुका था।

महादेव पुजारी को देखकर उसे बड़ा अचंभा हुआ। तब महादेव ने ही उससे कहा, "बेटा, रात को सर छिपाने के लिए क्या तुम्हें यही घर मिला? यह तो पिशाचों का डेरा है। शायद मुझे ही बताने में भूल हुई। मुझे 'दायीं ओर' कहना चाहिए था, लेकिन मैं 'बायीं ओर' कह गया। बारिश बहुत तेज़ थी, इसलिए मैं तुम्हें ढूँढने भी नहीं आ सका। अब तुम्हें ढूँढने निकला तो यहां पाया।"

नरसिंह को यह जानकर हैरानी हुई कि उसने रात पिशाचों के डेरे पर काटी। वह चौंक-सा पड़ा। फिर बोला, "पर मुझे कोई पिशाच नज़र नहीं आया। रात को मुझे जो मिला, वह तो एक बूढ़ा था।"

"तुम क्या जानते हो कि जिस बूढ़े ने तुम्हें यहां सोने को कहा था, वह खुद ही एक पिशाच था। वह दुबला-पतला था न, ऊँचे कद का? उसकी दायीं आंख के नीचे एक काला मस्सा भी होगा। ठीक है न?" महादेव ने उससे प्रश्न किया।

"हाँ, वही था यहाँ," नरसिंह ने अपनी परेशानी मिटानी चाही।

"ओह! उसे मरे तो दस साल हो चुके हैं। बड़ी तकलीफें उठायीं उसने। बुढ़ापा तो उसका बहुत ही बुरा गुज़रा। उसके परिवार वालों ने तो उसका पूरी तरह तिरस्कार किया। लेकिन लगता है जैसे यह सब भी काफी नहीं था। अब वह पिशाच बन कर तकलीफें झेल रहा है। उसके बारे में मैं ने कई लोगों से सुना था, लेकिन मुझे विश्वास

नहीं हुआ था। अब तुमसे सुन रहा हूँ तो विश्वास करना ही पड़ेगा," महादेव ने कहा।

यह जानकर कि वह रात भर एक पिशाच के साथ रहा, नरसिंह बुरी तरह कांपने लगा। खैर, एक सप्ताह के भीतर ही उसकी नयी दुकान खुल गयी और वह नर्मदा के साथ नये घर में रहने लगा। अब नर्मदा के प्रति उसका व्यवहार बदला हुआ था। वह उससे बड़े स्नेह से बात करता था। नर्मदा को यह सब बहुत अच्छा लगता। उसका विश्वास था कि शिव मंदिर के परिसर में आते ही सब कुछ बदल गया और नरसिंह के स्वभाव में भी एकदम परिवर्तन आ गया। अब उसमें पहले जैसी कोई बात न थी। गुस्सा तो अब उसके पर फटकता भी न था।

एक दिन नर्मदा जब शिव मंदिर में गयी तो महादेव पुजारी ने उससे पूछा, "बेटी, अब तो तुम खुश हो न? नरसिंह का व्यवहार अब तो तुम्हारे प्रति ठीक है न?"

"हां चाचा, शिव जी की कृपा से सब ठीक है," नर्मदा ने हंसते-हंसते उत्तर दिया।

महादेव चाचा चौंके। पूछा, "किस शिवजी की बात कर रही हो, बेटी?"

"आप यह कैसा सवाल कर रहे हैं चाचा! इस मंदिर के देवता, और कौन!" नर्मदा ने मंदिर के गर्भगृह की ओर इशारा किया।

"तुम ठीक कहती हो, बेटी!" महादेव पुजारी ने गहरी सांस भरी और मन ही मन अपने से बोला– यह सचमुच शिव जी की कृपा है!

शिव जी। पड़ोस के गांव से जिस शिव जी नाम के बूढ़े को महादेव चाचा बुलाकर लाये थे और फिर उसे पिशाच के रूप में पेश किया था, उसी शिव जी की कृपा से नरसिंह, यानी नर्मदा का पति, सही रास्ते पर आया था।

लेकिन यह बात महादेव ने अपने तक ही रखी। नर्मदा को इसकी भनक तक भी न लगने दी।

# दुःस्वप्न

बात पुरानी है । बर्मा के छोटे-से गांव में लेबसांग नाम का एक व्यक्ति रहता था । सूदखोरी उसका पेशा था ।

एक बार वह बीमार पड़ गया । उसे लगा अब बचेगा नहीं । उसके भीतर इच्छा जगी कि मरने से पहले उसे भगवान् और उसके भक्तों के बारे में कुछ कथाएं सुननी चाहिए ।

लेबसांग ने मंदिर के पुजारी को बुलवाया और उसे सारी बात समझायी ।

लेबसांग से पुजारी ने पूछा, "तुम मंदिर में कब से नहीं आये?"

"ठीक से याद नहीं आ रहा पंडित जी," लेबसांग ने उत्तर दिया ।

"यदि तुम्हारे मन में भगवान् के प्रति ऐसी ही भावना है, तब तो उसकी लीलाओं की तुम जितनी भी कथाएं सुनोगे, वे अकारथ जायेंगी ।" कहकर पुजारी यह जा, वह जा ।

लेबसांग लाचार था । उसने चिकित्सा की सहायता ली और ठीक-ठाक हो गया ।

एक दिन लेबसांग कहीं जा रहा था कि उसे रास्ते में वही मंदिर का पुजारी मिला । वह उसे भला-चंगा देखकर हैरान रह गया । बोला, "ऐसी गंभीर अवस्था से भी तुम बच निकले?"

लेबसांग बोला, "हां, पंडित जी । मैं ठीक हो गया हूं, पर एक बहुत बुरा स्वप्न अब मेरा पीछा कर रहा है ।"

"वह स्वप्न क्या है? ज़रा सुनूं तो!" पंडित ने जिज्ञासा दिखायी ।

लेबसांग बोला, "मैंने स्वप्न देखा कि मैं मरकर सीधे स्वर्ग जा रहा हूं । स्वर्ग पहुंचा तो वहां द्वारापाल ने मुझे रोका और बोला—क्या कभी तुमने किसी संन्यासी या पुजारी से कोई पुण्य कथा सुनी है? मैंने जब द्वारपाल को बताया कि नहीं, तो वह खीझकर बोला—"तब तुम यहीं रुको । मैं किसी पंडित को

**बर्मा की लोककथा**

ढूंढ़कर लाता हूं। जब तक वह तुम्हें कथा नहीं सुनायेगा, तुम स्वर्ग में प्रवेश पाने के योग्य नहीं हो सकोगे!"

पर कुछ ही देर बाद द्वारपाल लौट आया। बोल, "तुम्हारा भाग्य तुम्हारा साथ नहीं दे रहा। स्वर्ग में कोई भी पंडित या सन्यासी नहीं है!"

लेबसांग की बात सुनकर पुजारी जल-भुन गया और वहां से चलता बना।

अभी कुछ ही दिन बीते थे कि गांव के पटेल को लेबसांग के स्वप्न के बारे में पता चला। उसे पुजारी से पहले ही द्वेष था। इसलिए उसने लेबसांग को बुलाया और उससे बोला, "मुझे तुम्हारे स्वप्न के बारे में अभी अभी पता चला है। तुम्हारी बीमारी के दौरान भी पुजारी जिस तरह से तुम से पेश आया, उसका भी मुझे पता चल गया था। खैर, तुम ने पुजारी को जवाब करारा दिया। उस स्वप्न से क्या तुम्हारा पीछा छूटा, या कि किसी दूसरे स्वप्न ने तुम्हें घेर रखा है?"

"इन दिनों मैं एक और खराब स्वप्न देख रहा हूं।" लेबसांग ने उत्तर दिया।

"वह क्या है? मैं भी तो ज़रा सुनूं!" पटेल ने कौतूहलवश पूछा।

अब लेबसांग ने अपना दूसरा स्वप्न सुनाना शुरू किया। "मेरा पहला स्वप्न जैसे ही समाप्त हुआ," लेबसांग बोला, "मैं नरक की ओर चल पड़ा। नरक के द्वार पर पहुँचा तो वहां मुझे पुजारियों और संन्यासियों की आपस में लड़ने की आवाज़ आयी। मैं तब तक बहुत थक चुका था। वहीं द्वार के पास ही एक चारपाई पड़ी थी। मैंने उस चारपाई को बिछाया और उस पर बैठने को हुआ। इतने में वहां एक यमदूत चला आया और बोला– "यह चारपाई तुम्हारे लिए नहीं है। यह गांव के पटेल के लिए है। इसीलिए इसे यहां रखा गया है। – और इतना कहकर यमदूत ने मुझे उठाकर दूर फेंक दिया।"

लेबसांग का दूसरा स्वप्न सुनते ही पटेल की आखें चढ़ गयीं। वह मारे गुस्से के कुछ बोल नहीं पा रहा था। लेबसांग स्थिति की नज़ाकत को समझ गया और चुपचाप वहां से खिसक लिया।

# बिकाऊ माल

स्वर्ग में जब देवेंद्र सिंहासन पर बैठे तो उन्होंने जिस लोक के लिए जो कुछ करना चाहिए था, कर दिया। वह चाहते थे कि भूलोक के लोग सुखपूर्वक रहें। आखिर उन्होंने सातों नक्षत्रों को बुलवाया।

नक्षत्रों ने हाथ जोड़कर देवेंद्र से पूछा, "हमारे लिए क्या आदेश है, देवप्रभु?"

इस पर देवेंद्र बोले, "मैं सभी भूलोकवासियों को सुख प्रदान करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो कुछ भी मैं दूँ, तुम्हारे माध्यम से दूँ, और तुम उसका उनसे उचित मूल्म वसूल करो।"

"जैसा आपका आदेश होगा, वैसा ही होगा, देवप्रभु!"

देवेंद्र ने पहले नक्षत्र को एक सोने की डिबिया दी और बोले, "देखो, इस डिबिया में हास्य रस है। जो इसका सेवन करेगा, वह संतोष से ओतप्रोत रहेगा, और संतोष ही सभी प्राणियों की मूल शक्ति है।"

फिर उन्होंने दूसरे नक्षत्र को दूसरी डिबिया सौंपते हुए बोले, "इस डिबिया में सुशीलता है। यही प्राणियों का प्राण है।"

तीसरे को भी उन्होंने एक डिबिया दी और बोले, "इस में स्वास्थ्य है। बिना स्वास्थ्य के मानव एक क्षण भी टिक नहीं सकता।"

चौथे के हाथ पर उन्होंने एक कटोरदान रखा और बोले, "इस कटोरदान में चिरजीवन है। जीवन होगा तो इच्छाओं की पूर्ति भी होगी।"

पांचवें नक्षत्र को उन्होंने एक मंजूषा सौंपी और बोले, "इस में कीर्ति है। आदमी की पहचान इसी से बनती है। इसे पाकर हर कोई आनंद विभोर हो जाता है।"

छठे नक्षत्र के हिस्से भी एक कटोरदान आया। उस में आनंद था। देवेंद्र बोले, "अगर किसी को आनंद मिल जाये तो उसे

चंदामामा में २५ वर्ष पूर्व प्रकाशित कहानी

और क्या चाहिए? ऋषि-मुनि इसी के लिए तो जप-तप करते हैं।"

अब बारी सातवें नक्षत्र की थी। उसके हिस्से भी एक डिबिया ही आयी। डिबिया में ऐश्वर्य था। बोले, "ऐश्वर्य कोई कम महत्त्वपूर्ण नहीं। जीवनरथ को आगे बढ़ाने में यह ईंधन का काम करता है।"

सातों नक्षत्रों ने अपनी-अपनी चीजें संभाल ली थीं। अब उन्होंने सुंदर स्त्रियों का रूप धारण किया और निकलीं माल बेचने।

पहली, दूसरी और तीसरी से किसी ने कोई माल नहीं खरीदा। अब चौथी, माल लेकर आवाज़ लगाने लगी—"दीर्घजीवन ले लो! चिरजीवन ले लो!"

उसके माल में कुछ लोगों ने रुचि दिखायी। वे उससे उसके दाम पूछते लगे। कुछ भाव-ताव भी करने लगे।

"पर मेरी अन्य सहेलियों के पास जो माल है, वह भी तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी है। मेरी इस सहेली के पास हास्य रस है। और उसके पास सुशीलता है, और उसके पास स्वास्थ्य है। मेरी इस सहेली के पास कीर्ति, और इसके पास आनंद है। और मेरी यह सहेली, इसके पास एश्वर्य है। बोलो, इन से तुम लोगों ने क्या खरीदा है? कुछ तो खरीदो?"

"नहीं, नहीं," लोगों का कोरा उत्तर था।

तब दीर्घजीवन वाली स्त्री ने कहा, "यदि तुम दूसरी चीज़ें नहीं खरीदोगे तो मेरे इस माल का क्या फायदा? दीर्घजीवन अपने आप में क्या है? कुछ भी नहीं।"

लेकिन इस स्त्री ने नमूने के तौर पर अपने हाथ पर थोड़ा-सा दीर्घजीवन लगा रखा था। यहाँ वह खड़ी थी, वहाँ पास ही के पेड़ पर एक तोता बैठा था। तोता एकाएक उड़ता हुआ आया। और उस स्त्री के हाथ से दीर्घजीवन का वह नमूना अपनी चोंच में भर कर फुर्र से उड़ गया।

कहते हैं दीर्घ जीवन का वह नमूना खाने से वह तोता तीन सौ वर्ष की आयु को प्राप्त हुआ। हर कोई जब उसे देखता तो उसकी उम्र पर आश्चर्य करता!

ओकापी
यह जानवर कांगो के घने जंगलों में पाया जाता है । इसकी खोज इस शताब्दी के प्रारंभ में हुई थी । यह जिराफ की जाति का है और उसका एकमात्र बंधु माना जाता है ।

सबसे बड़ा दलदली इलाका
रूस के पूर्वी भाग में प्रीपेट नाम का नदी ग्रहण-क्षेत्र है जिसे दुनिया में सबसे दलदल वाला इलाका माना जाता है । यह १८,१२५ वर्गमीलों में फैला हुआ है ।
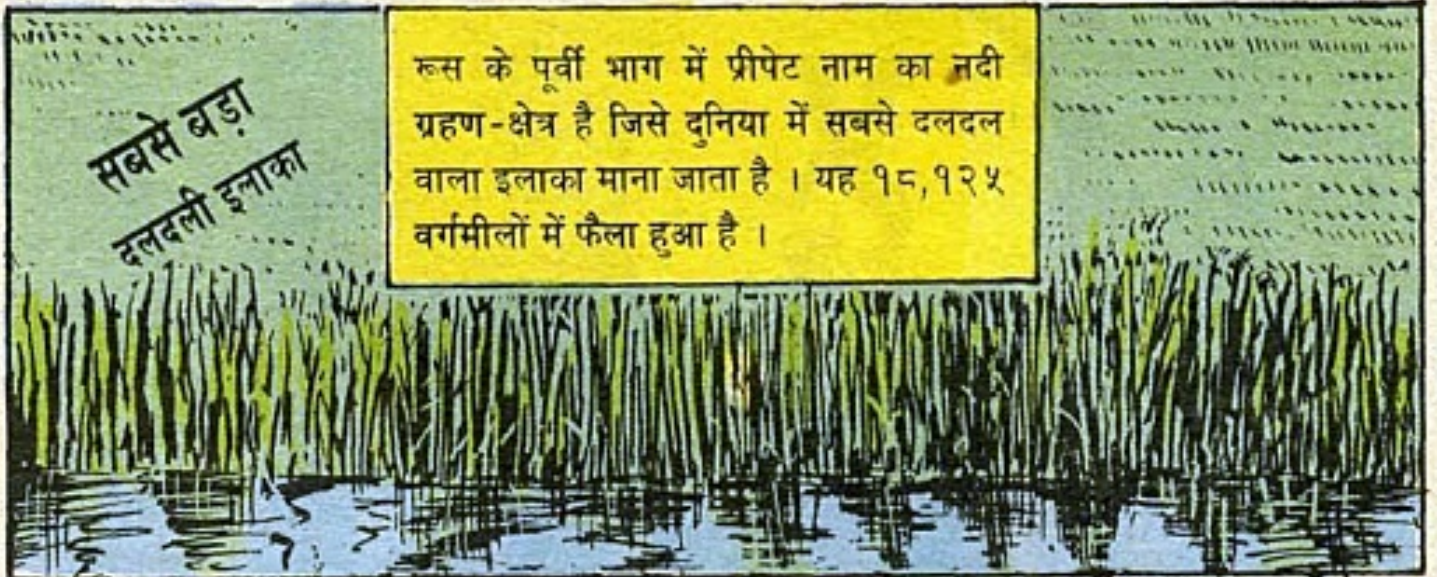
कांटे जैसी चोंच वाला पक्षी
गैलैपेगोस द्वीपों (प्रशांत महासागर) में एक कठफोड़ा पक्षी पाया जाता है जिसका अंगरेजी नाम 'वुडपैकर फिंच' है । इसकी चोंच कांटानुमा होती है । इसका भोजन कीड़े हैं जिन्हें वह अपनी इस चोंच से पेड़ों के भीतर से खोज निकालता है ।
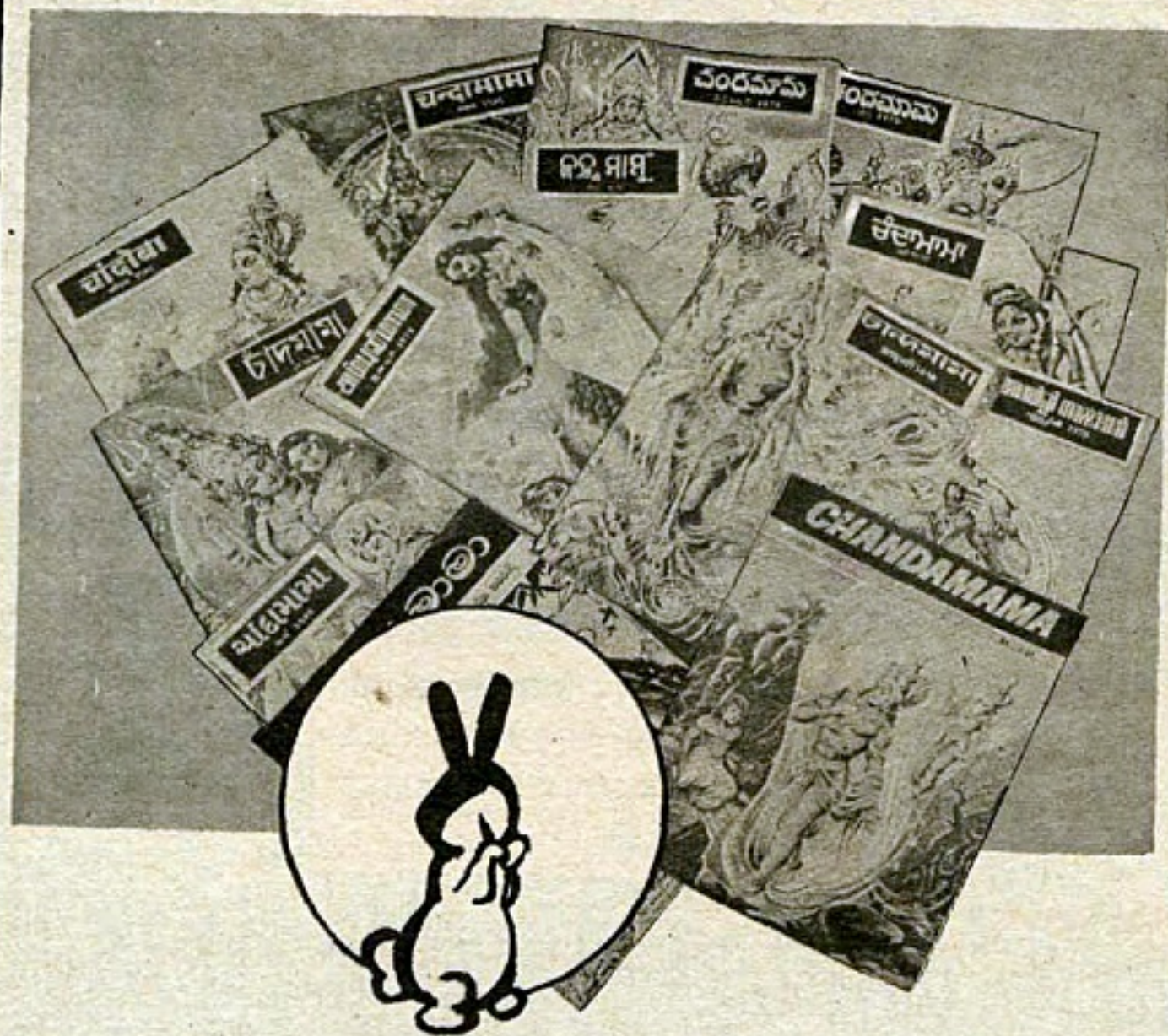
चन्दामामा
CHANDAMAMA

# फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

## पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

K. Padmanabha

Devidas Kasbekar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अप्रैल '९१ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

---

### फरवरी १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : मेरी गुड़िया रानी बोल!

द्वितीय फोटो : क्यों गुमसुम है, मुंह तो खोल!!

प्रेषक : सत्येन्द्र जैन, द्वारा श्री रामसेवक, स्टेशन मास्टर, माखाड. लोहावट (राज.)




Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine
COOKIES
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज
THE FINEST, WIDEST RANGE